Date of Posting 13-14 every month
Rs. 25/- per copy

DL No. DL (E)-20/5275/2020-2022
RNI No. DELHIN/2008/24416

आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार

ज्ञान विज्ञान एवं तकनीकी सहित पशु विज्ञान की संपूर्ण पत्रिका

❑ खंड : 13 ❑ वर्ष : 13 ❑ अंक : 6 ❑ जून, 2020 ❑ मूल्य: 25.00 ❑ दिल्ली

AYURVET™
पारम्परिक ज्ञान
आधुनिक अनुसंधान

पशुस्वास्थ्य और पशुपालकों
की आय वृद्धि के लिए समर्पित

"BE VOCAL ABOUT LOCAL"
-माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

पशुपालन में वर्षभर के कार्यों की सारणी

हाथ धोने से हाथ मत धोना

आत्मनिर्भर भारत पैकेज-पशुपालन, हर्बल खेती, मत्स्य व मधुमक्खी पालन पर जोर

पी.एम. केयर फंड में आयुर्वेट लिमिटेड ने दिए 1 करोड़ रुपए

AYURVET™

PMKVY
प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना

ARF
AYURVET RESEARCH FOUNDATION

कौशल भारत

कृषि और पशुपालन-ग्रामीण अर्थव्यवस्था की कुंजी

हमारे प्रमुख कौशल क्षेत्र

- दुग्ध उत्पादन
- कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियन
- जैविक खाद्य उत्पादन
- बायोगैस संचालन
- जैविक खेती
- औषधीय पौधों की खेती
- हाइड्रोपोनिक्स प्रौद्योगिकी
- मत्स्य पालन

प्रशिक्षण पाएं, आमदनी बढ़ाएं

कृषि एवं पशुपालन को यदि कुशलता एवं ज्ञान के साथ किया जाए, तो यह आपके उत्पादन को दुगुना कर सकता है।

तो आईए, साथ मिलकर कुशल भारत का निर्माण करें, जो हमारे ग्रामीण रोजगार को संपन्नता से भर दें।

Contact Us

प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए सम्पर्क करें:-

आयुर्वेट रिसर्च फाउंडेशन

AYURVET™

कॉरपोरेट ऑफिस: 101-103, प्रथम तल, के.एम. ट्रेड टॉवर, प्लॉट नं. एच-3, सैक्टर-14, कौशाम्बी-201010(उ.प्र.),दूरभाष: 91-120-7100201, फैक्स: 7100202

रजिस्टर्ड ऑफिस: 4 तल, सागर प्लाजा, डिस्ट्रिक सेंटर, लक्ष्मी नगर, विकास मार्ग, नई दिल्ली-92

आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार

ज्ञान विज्ञान एवं तकनीकी सहित पशु विज्ञान की संपूर्ण पत्रिका

खंड : 13 | अंक : 6 | जून, 2020 | दिल्ली

प्रकाशक व प्रधान सम्पादक :
मोहन जे. सक्सेना

सम्पादक:
डॉ. अनूप कालरा

संपादकमंडल:
आनन्द मेहरोत्रा एवं डॉ. दीपक भाटिया

संपादकीय सदस्य:
अमित बहल, डॉ. ए.बी. शर्मा, डॉ. भास्कर गांगुली, डॉ. दीप्ति राय एवं डॉ. आशीष मुद्गल

मूल्य : 25/- रुपए प्रति अंक
वार्षिक : 275/- रुपए

सारे भुगतान मनीआर्डर/चैक/ड्राफ्ट **''आयुर्वेट लिमिटेड, दिल्ली''** के नाम से दिए जाएं। कृपया दिल्ली से बाहर के चैक में बैंक कमीशन के 30/- रुपए अतिरिक्त जोड़ दें।

पत्रिका से संबंधित सभी विवादित मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे।

पत्रिका में प्रकाशित लेख/विचार लेखकों के निजी हैं। प्रकाशक/संपादक इस हेतु उत्तरदायी नहीं हैं।

आयुर्वेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक व मुद्रक श्री मोहन जे. सक्सेना द्वारा छठा तल, सागर प्लाजा, लक्ष्मी नगर, विकास मार्ग, दिल्ली-92 से प्रकाशित व मै. श्री राम इंटरप्राईजेज, एम-71, जैन मंदिर गली, पंचशील गार्डन, नवीन शाहदरा, दिल्ली द्वारा मुद्रित।

संपादकीय/व्यवस्थापीय कार्यालय: आयुर्वेट लिमिटेड, 101-103, प्रथम तल, केएम ट्रेड टॉवर, प्लांट नं. एच-3, सैक्टर-14, कौशाम्बी-201010 (उ.प्र.). दूरभाष: 91-120-7100201, फैक्स : 91-120-7100202.

Web: www.ayurvet.com, e-mail: info@ayurvet.com

कहाँ क्या है

पशुधन

- हाथ धोने से हाथ मत धोना 5
- दूध का गुणवत्ता नियंत्रण एक आवश्यक कदम 7
- पशुओं में सरण की समस्या 10
- गाय भैंसों में गर्भपात एक आम समस्या 12
- पशुपालन में वर्षभर के कार्यों की सारणी 19
- डेरी सफलता की कुंजी स्वस्थ पशु, खुशहाल किसान 22
- गर्मियों में पशु प्रबंधन 23
- आयुर्वेट रूचामैक्स 24
- प्रवासी किसानों की आर्थिक सहायता और विकास योजनाएं 25
- पशुपालन (जैविक प्रबंधन) 31
- बछड़ों के दस्त (काफ स्कौर) में मौखिक इलेक्ट्रोलाइट पुनर्जलीकरण घोल की भूमिका 33
- पशुओं में गर्भावस्था-उपयोगी जानकारियां 36
- गर्मियों में पशु स्वास्थ्य प्रबंधन व कोरोना वायरस से बचाव 37
- आत्मनिर्भर भारत पैकेज-पशुपालन, हर्बल खेती, मत्स्य पालन और मधुमक्खी पालन पर जोर 36

अन्य

- आप पूछे, विशेषज्ञ बताएं 18
- खोज खबर 28
- महत्वपूर्ण दिवस 40

संपादकीय

प्रिय पाठकों,

कोरोना महामारी ने भारत ही नहीं पूरे विश्व की अर्थव्यवस्था को धराशायी कर दिया है। किसानों ने अपने आपको इस रोग से बचाने के उपाय जैसे मास्क पहनना, साबुन से हाथ धोना आदि सीखें हैं, जिनको अपनाकर उन्होंने अपने साथ-साथ दूसरों को भी बचाया है।

रोग से बचाव का एक उपाय है–अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाना। इसके लिए आवश्यक है कि हम अपनी हर्बल औषधियों जैसे अश्वगंधा, हल्दी व गिलोय आदि का इस्तेमाल करें। आयुर्वेट लिमिटेड किसान भाइयों के साथ मिलकर इन औषधियों की खेती करवा रहा है, ताकि किसानों की आय बढ़ सके। हमारा संस्थान इन औषधियों से पशु स्वास्थ्य उत्पाद तैयार कर रहा है, ताकि पशुओं के स्वास्थ्य को बेहतर करके उनके उत्पादन को बढ़ाया जा सके।

संकट की इस घड़ी में प्रभावित अर्थव्यवस्था को बचाने के लिए सरकार ने विशेष पैकेज का ऐलान किया है, जोकि किसानों/पशुपालकों के लिए किसी वरदान से कम नहीं हैं। यदि समझदारी से काम लिया जाए, तो इस अवसर का लाभ उठा कर किसान/पशुपालक पशुपालन को एक नई दिशा दे सकते हैं। आपके संस्थान आयुर्वेट लिमिटेड ने भी प्रधानमंत्री केयर फण्ड में एक करोड़ की राशि दी है, ताकि इस राशि से किसानों/पशुपालकों तक सहायता पहुंच सके।

नवीन अंक आपके हाथों में है। इस अंक में हमने महत्वपूर्ण विषयों पर आलेख दिए हैं। हमें पूरा विश्वास है कि पहले अंकों की तरह ही यह अंक भी आपके लिए उपयोगी साबित होगा। आप अपने सुझाव, प्रतिक्रियाएं एवं प्रस्ताव हम तक अवश्य पहुंचाएं, ताकि उसे भी आगामी अंक में स्थान दिया जा सके।

(डॉ. अनूप कालरा)

हाथ धोने से हाथ मत धोना

-तरुण श्रीधर

दुर्भाग्य यह है हम बड़ी बड़ी बातों में उलझ जाते हैं। हाथ धोने को स्वच्छता के महत्वपूर्ण व अभिन्न अंग के रूप में बढ़ावा दिया जाता रहा है। इससे पूर्व सार्स, स्वाइन फ्लू आदि के समय भी इस पर भरपूर बल दिया गया। यह गंभीरता से सोचने की बात है कि हम इस पर कायम क्यों नहीं रहते। सामान्य समय में भी जो प्रक्रिया जीवन का हिस्सा होनी चाहिए उसका महामारी के समय में भी अनुसरण करवाने के हलए विशेष प्रयास क्यों करने पड़ें?

साबुन के प्रयोग के साथ प्रतिदिन अक्सर हाथ धोना एक अत्यंत सरल और सस्ती प्रक्रिया है। बचपन से ही इस पर कभी सोचना पड़ा, न ही कभी किसी अन्य से यह सुनना पड़ा कि हाथ धो कर ही यह कार्य करो। दिनचर्या के इस सामान्य कार्यकलाप को एक दिन इतना महत्व मिलेगा, इतनी चर्चा होगी, कभी सोचा न था। पर आज जब पूरा विश्व कोरोना वायरस से जुड़ी महामारी से जूझ रहा है तो हाथ धोने का लाभ पुनः प्रमुखता के साथ उजागकर हो रहे हैं।

यानी, हाथ धोने से ही घातक संक्रमण की कड़ी को प्रभावी ढंग से तोड़ा जा सकता है। ऐसा कहना है विश्व स्वास्थ्य संगठन यानी डब्ल्यूएचओ का। इसका पुरजोर समर्थन सभी चिकित्सक, सरकारें व सेलिब्रिटी भी कर रहे हैं। यह मात्र संयोग नहीं कि सबसे पहले प्रभावित होने वाले देशों में से एक जापान, सबसे जल्द उबर भी गया। कारण है जापानी समाज की साफ सफाई की संस्कृति और विशेष रूप से निरंतर साबुन के साथ हाथ धोना।

विडंबना यह है कि आज उस व्यक्ति एवं चिकित्सक की स्मृति और उस द्वारा स्थापित सिद्धांत का पुनर्जन्म हो रहा है, जिसे उसके जीवन काल में दुत्कारा गया और उसके स्थापित सिद्धांत को सिरे से नकार दिया गया। यह हैं डॉक्टर इगनाज फिलिप सेम्मेलवेस और सिद्धांत है 'कीटाणु और रोग संक्रमण को रोकने का सबसे प्रभावी ढंग और व्यवस्था है साबुन और पानी से हाथ धोना।' लुई पास्चर टीकाकरण के अविष्कारक और एलेग्जेंडर फ्लेमिंग पेनिसिलिन के खोजी को जन स्वास्थ्य के रूप में ख्याति मिली। जाहिर है सभी इनके नाम-काम से परिचत होंगे। पर संभवतः बहुत कम ने इगनाज फिलिप सेम्मेलवेस का नाम सुना होगा। उससे भी कम यह जानते होंगे कि आज जन स्वास्थ्य की दुनिया में इन्हें एक अग्रिम रक्षक और हस्ताक्षर माना जाता है।

हंगरी में पैदा हुए इगनाज फिलिप सेम्मेलवेस जुलाई 1846 में 28 वर्ष की आयु में तत्कालीन ऑस्ट्रियन साम्राज्य की राजधानी वियना के जनरल अस्पताल में चीफ रेजिडेंट नियुक्त हुए और अस्पताल के दो में से नंबर एक प्रसूति वार्ड में तैनात हुए। इस वार्ड में दाखिल लगभग सभी महिलाएं प्रसव से जुड़े बुखार से पीड़ित रहती थीं। और इस बीमारी से संक्रमण के चलते एक तिहाई मातृत्व की प्रतीक्षा कर रही युवतियां मृत्यु का शिकार भी हो रहीं थी।

अस्पताल के वरिष्ठ चिकित्सकों व विशेषज्ञों की सोच पुरानी थी कि क्योंकि अधिकतर महिलाएं निर्धन वर्ग से संबंद्ध हैं, स्वाभाविक है कि इनके स्वच्छता के मानक भी कमजोर हैं।

अतः उनके लिए प्रासविक बुखार, संक्रमण और एक तिहाई मृत्यु दर असामान्य घटना नहीं थी। डॉ. इगनाज इस निष्कर्ष से असहमत थे। उन्होंने परिस्थिति का गहरा अध्ययन किया।

उन्होंने पाया कि दूसरे वार्ड में संक्रमण और मृत्यु दर बहुत कम थी। डॉ. इगनाज के वार्ड को डॉक्टर और इंटर्न संभालते थे, जबकि दूसरे वार्ड का संचालन दाइयां करती थीं। छानबीन से यह बात सामने आई कि दाइयां तो वार्ड में ही कार्यरत थीं पर डॉक्टर और इंटर्न अन्य वार्डों और कभी कभार शवगृह में चक्कर काटने के बाद प्रसूति वार्ड में मरीजों को देखने आते। अब विभिन्न वार्डों के राउंडज के बीच न तो हाथ धोने की आदत थी और न कोई प्रोटोकॉल।

मई 1847 में डॉ. इगनाज ने हाथ धोने का प्रोटोकॉल स्थापित किया, जिसके तहत हर इंटर्न के लिए यह अनिवार्य किया गया कि मरीज को हाथ लगाने से पहले हाथों को क्लोरीन और चूने के मिश्रण से धोएं। मात्र दो माह के समय में प्रासविक ज्वर से मृत्यु दर की प्रतिशतता 18.27 से 1.27 रह गई। अगले वर्ष 1848 में मार्च और अगस्त माह के बीच इस संक्रमण से एक भी मृत्यु नहीं हुई। यह एक चमत्कार था जो हाथ धोने से हुआ।

अब डॉक्टर इगनाज ने इस विषय पर विभिन्न मेडिकल पत्रिकाओं में लेख लिखे और अपने इस साधारण से सिद्धांत को व्यापक प्रचार देने का प्रयास किया। पर क्या इनके व्यवसाय से जुड़े साथियों ने इसे स्वीकार करने के बजाय सिरे से नकार दिया। मजाक किया कि विचित्र प्राणी है, जो मृत्यु से बचने का इलाज हाथ धोने को बताता है।

व्यापक दुष्प्रचार और निरादर से 1865 में 47 वर्ष की आयु में डॉ. इगनाज मानसिक रूप से इतना टूट गए कि इन्हें मानसिक रोगों के अस्पताल में भर्ती होना पड़ा। कुछ ही समय पश्चात सेप्टिसेमिया से इनकी मौत हो गई। कहा जाता है कि गार्डो ने इन्हें पीटा था। पर पुष्टि नहीं है। इससे बड़ा विरोधाभास क्या होगा कि जिसका जीवनकाल में इतना तिरस्कार किया गया, आज स्वास्थ्य जगत उसे फरिश्ता मानता है।

डॉ. इगनाज के नाम पर विश्वविद्यालय है और जन एवं निवारक स्वास्थ्य में इनके सिद्धांत पढ़ाए जाते हैं। संभवतः उन्होंने बेबाकी से बात कही और विवेक का प्रयोग नहीं किया। डॉक्टर-वैज्ञानिक थे राजनीतिज्ञ नहीं।

यह कहानी इस विश्वास को सार्थक करती है कि जटिलतम समस्या या संकट का सबसे प्रभावी हल साधारण व सरल ही होता है। दुर्भाग्य यह है हम बड़ी बड़ी बातों में उलझ जाते हैं। हाथ धोने को स्वच्छता के महत्वपूर्ण व अभिन्न अंग के रूप में बढ़ावा दिया जाता रहा है। इससे पूर्व सार्स, स्वाइन फ्लू आदि के समय भी इस पर भरपूर बल दिया गया। यह गंभीरता से सोचने की बात है कि हम इस पर कायम क्यों नहीं रहते। सामान्य समय में भी जो प्रक्रिया जीवन का हिस्सा होनी चाहिए उसका महामारी के समय में भी अनुसरण करवाने के लिए विशेष प्रयास क्यों करने पड़ें?

स्वच्छ जीवन शैली अपने आप में संक्रमण से प्रतिरक्षा है। आज दिन में दस बार हाथ धोते हैं और पचास बार सैनिटाइजर मलते हैं। यह नौबत आए ही क्यों? यह स्वच्छता में विश्वास का प्रतीक नहीं, मौत से भय का प्रमाण है। हम आदत के अनुसार क्या इस शिक्षा को हालात सामान्य होते ही फिर भूल जाएंगे? डॉक्टर इगनाज सेम्मेलवेरा व उनका कार्य दुष्प्रचार, पूर्वाग्रह, झूठ, अज्ञानता और विज्ञानवाद का विरोध के शिकार हुए। आज कोरोना वायरस संक्रमण से उत्पन्न स्थिति पर भी सोशल मीडिया पर व्यापक दुष्प्रचार और अज्ञानता का प्रदर्शन हो रहा है। वायरस से अधिक रफ्तार के साथ तो भय और आतंक फैल रहे हैं। ऐसे में डॉक्टर इगनाज क्यों याद न आएं? क्यों न हम वैज्ञानिकों और विशेषज्ञों की सुनें और मानें? कुछ समय के लिए कोरोना वायरस पर अपने विचारों और ज्ञान को भी लॉकडाउन में रखना उचित होगा। □□

लेखक भारतीय प्रशासनिक सेवा के पूर्व अधिकारी हैं

दूध का गुणवत्ता नियंत्रण एक आवश्यक कदम

–राजेश कुमार, मनीषा माथुर मोनिका करनानी एवं धर्मेन्द्र छारंग

दूध अन्य खाद्य पदार्थों के बीच उच्च स्थान पर है और इसे जन्म से लेकर मृत्यु तक मानव के लिए सबसे उत्तम भोजन माना जाता है, क्योंकि इसमें न केवल अच्छे संवेदी गुण होते हैं बल्कि शरीर में तेजी से विकास के लिए आवश्यक सभी पोषक तत्व मौजूद होते हैं। इसमें प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, वसा, खनिज और विटामिन जैसे सभी आवश्यक पोषक तत्व होते हैं जो मानव स्वास्थ्य के लिए आवश्यक हैं। इसके अलावा डेरी कृषि में लगे लाखों ग्रामीण परिवारों के लिए आय का एक महत्वपूर्ण स्रोत बन गया है। दुग्ध उद्योग की सफलता के कारण दूध संग्रह, परिवहन, प्रसंस्करण और वितरण की एकीकृत सहकारी प्रणाली से गुणवत्ता बनी हुई है।

दुग्ध उत्पादन में भारत ने प्रथम स्थान प्राप्त किया, विश्व उत्पादन के 18.5 प्रतिशत के लिए लेखांकन, 6.26 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज करते हुए, दुनिया में सबसे बड़ा एकल दूध उत्पादक देश बनने के लिए अमेरिका से आगे निकल गया। पिछले 25 वर्षों में दूध उत्पादन लगातार और तेजी से बढ़ा है, 1979-80 में 50 मिलियन मीट्रिक टन से बढ़कर 2016-17 में 163.7 मिलियन मीट्रिक टन हो गया है। भारत में दूध की प्रति व्यक्ति उपलब्धता 2016-17 में 176 ग्राम से बढ़कर 352 ग्राम प्रतिदिन हो गई है।

गुणवत्ता उन विशेषताओं के संयोजन को संदर्भित करती है जो किसी उत्पाद की स्वीकार्यता को बढ़ाती है। चूंकि दूध समाज के एक बड़े हिस्से के लिए पौष्टिक और पौष्टिक भोजन

है, इसलिए दूध की गुणवत्ता सुनिश्चित करना सार्वजनिक स्वास्थ्य की सुरक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण पहलू है। दूध का गुणवत्ता नियंत्रण एक व्यापक शब्द है, जो दूध के रासायनिक, भौतिक, तकनीकी और जीवाणु संबंधी और सौंदर्य संबंधी विशेषता से संबंधित है। गुणवत्ता नियंत्रण प्रक्रिया की गतिविधि की चिंता करता है जो हैंडलिंग, प्रसंस्करण, तैयारी, पास्चुराइज़ेशन भंडारण और वितरण के सभी चरणों के दौरान निर्धारित सहिष्णुता सीमा के भीतर उत्पादों के विनिर्देशों और मानक के रखरखाव और निरंतरता को सुनिश्चित करता है। यह आगे यह भी सुनिश्चित करता है कि इन परिचालन के दौरान सभी मूल और वांछनीय विशेषताओं को बरकरार रखा जाए और जब तक उत्पाद उपभोक्ता तक न पहुंच जाए, तब तक अनछुए बने रहे।

रचना की गुणवत्ता दूध की संरचना दुधारू पशु की नस्ल, प्रजाति, दुग्धपान की अवस्था, चारा का मौसम, अयन की रोग की स्थिति और दुग्ध में भिन्नता के साथ बदलती है।

बैक्टीरिया की गुणवत्ता

दूध मानव के लिए एक पौष्टिक भोजन है। यह सूक्ष्मजीव विशेष रूप से बैक्टीरिया की वृद्धि के लिए एक आदर्श माध्यम के रूप में कार्य करता है। दूध में रोगाणुओं की वृद्धि दोनों आंतरिक और बाहरी कारकों पर निर्भर करती है। सूक्ष्मजीव विज्ञानी गुणवत्ता नियंत्रण का मूल उद्देश्य पूर्ण दूध और दूध उत्पादों के निर्माण के लिए रोगमुक्त दूध से दूध प्रसंस्करण संयंत्र को द्रव दूध प्रदान करना है। माइक्रोबायोलॉजिकल गुणवत्ता

महत्व को मानती है, क्योंकि दूध के बड़े पैमाने पर संग्रह और वितरण एक विस्तृत क्षेत्र में रोगजनकों के संदूषण और संचरण के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान करता है। सूक्ष्म जीव हर जगह पशुओं और लोगों पर, हवा में, मिट्टी में, पानी में और दूध में पाए जाते हैं।

पशु शेड और पर्यावरण

शेड के दूध देने वाले क्षेत्र को विशेष स्वच्छ रखने पर ध्यान देने की आवश्यकता है। दूध देने वाली जगह का फर्श कंक्रीट से बना होना चाहिए, ताकि कीचड़, मूत्र, मल और फीड अवशेषों को हटाया जा सके। प्रत्येक बार दूध देने से पहले और बाद में इसे साफ पानी से धोना चाहिए। सुरक्षित और पीने योग्य पानी के उचित जल निकासी की पर्याप्त व्यवस्था के लिए सुविधाएं बनाई जानी चाहिए।

पशु

पशु स्वयं संदूषण का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। पशु और उसके स्वास्थ्य की देखभाल और प्रबंधन स्वच्छ दूध उत्पादन के लिए प्रारंभिक बिंदु है। पशु की त्वचा संभव संक्रमण के लिए एक बड़ी वजह बनती है। गोबर, मूत्र, गंदगी, धूल और बाल पर लाखों बैक्टीरिया होते हैं, जो दूध में गिरते हैं। शरीर पर लंबे बाल, पीछे के पैर, पूंछ और अयन को लगातार अंतराल पर क्लिप किया जाना चाहिए। नियमित रूप से पशुओं को संवारने से बालों और धूल को दूध से दूर रखने में मदद मिल सकती है। अयन सकल रूप से बैक्टीरिया से दूषित होगा, तब भी जब यह साफ दिखाई देगा। यदि यह स्तन की सूजन जैसे संक्रमण से पीड़ित है, तो दूध में हानिकारक रोगजनक सूक्ष्मजीव शामिल

होंगे। रोगग्रस्त पशुओं के दूध को अलग रखा जाना चाहिए और सुरक्षित रूप से निपटाया जाना चाहिए। स्ट्रिप कप के साथ प्रत्येक दूध देने वाले स्थान पर फोरमिल्क का परीक्षण करना उचित है।

मिल्कर और दूध देने की दिनचर्या

हाथ मिल्किंग के मामले में, दूध दुहने से आने वाले प्रदूषण का खतरा मशीन के दूध की तुलना में अधिक होता है। जैसे ही दूध दुहने वाला एक पशु से दूसरे पशु की ओर बढ़ता है, वह झुंड के सभी पशुओं को रोगजनक सूक्ष्म जीव स्थानांतरित कर सकता है। इसलिए नाखूनों को काटे और साफ करें। दूध देने से पहले उसे साबुन और पानी से हाथ धोना चाहिए और उन्हें साफ तौलिये से सुखाना चाहिए। एक अच्छी दूध देने वाली दिनचर्या दूध को दूषित होने से बचाती है।

दूध देने के उपकरण

बाल्टी, दूध देने वाले डिब्बे और फिल्टर जैसे सभी डेरी बर्तन उपयोग के तुरंत बाद अच्छी तरह से साफ कर लेने चाहिए। उपकरण पर कोई भी दूध के अवशेष सूक्ष्मजीवों को तेजी से बढ़ने की अनुमति देगा। फोरमिल्क कप और अयन कपड़े सहित सहायक उपकरण भी प्रभावी ढंग से साफ और कीटाणुरहित होने चाहिए।

सफाई और कीटाणुशोधन

सबसे पहले बर्तन को गर्म पानी और डिटर्जेंट से धोएं। अच्छे ब्रिसल्स वाले साफ ब्रश का इस्तेमाल करना चाहिए, फिर साफ पानी से धोया करें। उसके बाद उपकरण को गर्म पानी के साथ या कीटाणुनाशक के साथ कीटाणुरहित करना पड़ता है, बर्तन को कपड़े के टुकड़े के साथ रगड़े नहीं, बल्कि धोने के तुरंत बाद उन्हें सूखा दें। बैक्टीरिया शुष्क परिस्थितियों में नहीं बढ़ेंगे, लेकिन प्रचलित तापमानों में दूध देने वाले उपकरणों में दर्ज पानी बड़े पैमाने पर बैक्टीरिया के विकास की स्थिति पैदा करेगा। धोने के पानी की निकासी की सुविधा के लिए बर्तन को एक सुखाने वाले रैक पर धूप में उल्टा रखें।

भंडारण और परिवहन

दूध को ढक्कन के साथ साफ कंटेनरों में इकट्ठा किया जाना चाहिए और ठंडे और छायादार स्थान पर रखा जाना चाहिए, जहां संदूषण का खतरा कम से कम हो। परिवहन स्वच्छ कंटेनरों में भी होना चाहिए। परिवहन समय को न्यूनतम रखना महत्वपूर्ण है। दूध को दूध संग्रह केंद्र तक जल्दी से पहुंचना चाहिए, आदर्श रूप से दूध देने के 2-3 घंटे के भीतर। □□

स्नातकोत्तर पशु चिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, (पी.जी.आई.वी.ई.आर.) जयपुर

अगर पशु ने खाया विषाक्त चारा, सताएंगे उसे दस्त, बदहज़मी और अफारा।

AYURVET™

आयुर्वेट के उत्पाद, पाचन समस्याओं से दिलाएं निदान

डायरोक
ड्राई सस्पेंशन

दस्त की शीघ्र एवं प्रभावी रोकथाम के लिए

विशेषताएं

- दस्त की शीघ्र रोकथाम करे
- पतले गोबर को ठीक करे
- पाचन में सहायक सूक्ष्मजीवियों को कोई नुकसान नहीं पहुंचाए

सेवनविधि

- 30 ग्राम, पांच गुना पानी में अच्छी तरह मिलाकर पशुओं को दिन में दो बार पिलाएं
- गंभीर स्थिति में हर 6 घंटे के बाद पिलाएं

पैक

30 ग्राम

1 किलोग्राम

पचोप्लस
बोलस

अपाचन व अरुचि में प्रभावशाली

विशेषताएं

- पाचन क्रिया को सुदृढ़/सुचारू करे
- बुखार व संक्रामक रोगों के कारण कम हुई भूख को ठीक करे
- पाचन में सहायक सूक्ष्मजीवियों की संख्या बढ़ाने तथा उनके विकास के लिए रुमैन पी.एच. को नियंत्रित करे

सेवनविधि

- दो बोलस दिन में दो बार, 2-3 दिनों तक अथवा पशुचिकित्सक के निर्देशानुसार दें।

पैक

4 बोलस की एक स्ट्रिप

अफानिल
इमलशन

अफारा की परेशानी से राहत के लिए

विशेषताएं

- पशु के पेट (रुमैन) में बने अफारा एवं झाग को कम करे
- पशु के पेट (रुमैन) में रुकी गैस को जल्द बाहर निकाले
- पाचन में सहायक सूक्ष्मजीवियों को कोई नुकसान नहीं पहुंचाए

सेवनविधि

- 50 मि.ली. दिन में दो बार, 2 दिनों तक पिलाये अथवा पशुचिकित्सक के निर्देशानुसार दें

पैक

100 मि.ली.

पशुओं में सरण की समस्या

-वैभव भारद्वाज और गौरव कुमार

पशु का पिछले पैरों को झटक के चलने को सरण कहते है। इसमे पशु कभी-कभी या लगातार पिछ्ले पैरों को झटका देकर चलता है। यह समस्या किसी भी मौसम में हो सकती है, परंतु आमतौर पर सर्दियों के मौसम में ज्यादा होती है। इस समस्या में पशु के घुटने की हड्डी ऊपर चढ़ जाती है और वही अटक जाती है। इसकी वजह से पशु को पैर मोड़ने में दिक्कत आती है। इस समस्या में पशु को उठने-बैठने मे काफी परेशानी होती है। कभी-कभी तो पशु को एकदम से उठ कर चलने के बाद पिछ्ले पैरो मे लंगडापन भी आ जाता है। अगर काफी लम्बे समय तक यह समस्या रहे तो पशु का खाना-पीना भी कम हो जाता है जिसकी वजह से पशु का दूध भी कम हो जाता है। बाद में पशु के पिछ्ले पैरों के खुर भी घिसने लगते हैं। यह समस्या पिछ्ले किसी भी पैर में या दोनों पैरो में हो सकती है।

पशु का पिछले पैरों को झटक के चलने को सरण कहते है। इसमे पशु कभी-कभी या लगातार पिछ्ले पैरों को झटका देकर चलता है। यह समस्या किसी भी मौसम में हो सकती है, परंतु आमतौर पर सर्दियों के मौसम में ज्यादा होती है। इस समस्या में पशु के घुटने की हड्डी ऊपर चढ़ जाती है और वही अटक जाती है। इसकी वजह से पशु को पैर मोड़ने में दिक्कत आती है। इस समस्या में पशु को उठने-बैठने मे काफी परेशानी होती है। कभी-कभी तो पशु को एकदम से उठ कर चलने के बाद पिछ्ले पैरो मे लंगडापन भी आ जाता है। अगर काफी लम्बे समय तक यह समस्या रहे तो पशु का खाना-पीना भी कम हो जाता है जिसकी वजह से पशु का दूध भी कम हो जाता है। बाद में पशु के पिछले पैरों के खुर भी घिसने लगते हैं। यह समस्या पिछले किसी भी पैर में या दोनों पैरो में हो सकती है।

सरण का कैसे पता लगाये

- पशु का पिछले पैरों को झटक के चलना
- काफी देर बैठने के बाद एकदम से उठ कर चलने में पिछले पैरों को झटक कर चलना
- पिछले पैर को बाहर की तरफ खीच कर चलना
- पैर में खिचाव की वजह से उठने-बैठने में दिक्कत होना
- सर्दियों के मौसम में ज्यादा लगड़ेपन की शिकायत होना
- पिछले पैरों के खुर घिस जाना

सरण का उपचार

इस समस्या का उपचार एक छोटे से ऑपरेशन से ही होता है, जो एक पशु चिकित्सक द्वारा ही किया जाता है। ऑपरेशन के दौरान पशु को एक तरफ लिटाया जाता है और जिस पैर में समस्या होती है वो पैर नीचे की तरफ रखा जाता है। फिर पशु चिकित्सक घुटने के पास एक छोटा सा चीरा लगाता है और वहाँ का एक लिगामेंट काट देता है। ऐसा करने से घुटने की हड्डी वापिस नीचे आ जाती है। और चीरे वाली जगह पर एक या दो टांके ही लगते हैं। ऑपरेशन के तुरंत बाद ही पशु सामान्य चलने लगता है।

ऑपरेशन के बाद रखे जाने वाली सावधानियाँ

- जख्म पर रोज दिन मे दो-तीन बार दवाई लगाना चाहिये
- पशु चिकित्सक द्वारा बताये गये टीके लगवाने चाहिये
- जख्म को मिट्टी, पानी, गोबर और पेशाब से बचाना चाहिये
- ऑपरेशन के 12-14 दिनों बाद खाल के टांकें कटवाने चाहिये। □□

पशु शल्य चिकित्सा एवं विविकरण विभाग, लाला लाजपतराय पशुचिकित्सा एवं पशुविज्ञान विश्वविद्यालय, हिसार-125004 (हरियाणा)

AYURVET

GES ALTERNATIVE GREEN ENERGY SOLUTIONS

ARF AYURVET RESEARCH FOUNDATION

किसान भाइयों के लिए खुशखबरी

धान की नर्सरी

गन्ने की नर्सरी

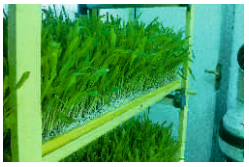

हरा चारा

अब खरीदें और पाएं सब्सिडी

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें: 7985318152

आयुर्वेट प्रोग्रीन हाइड्रोपोनिक्स तकनीक एक, लाभ अनेक

पौधे को उगाने के लिए सामान्यतः बीज को मिट्टी में डाला जाता है, जबकि हाइड्रोपोनिक्स तकनीक में पौधे को बिना मिट्टी के उगाया जाता है। मिट्टी पौधों के लिए पोषक पदार्थों के संवाहक का काम करती है, लेकिन मिट्टी पौधे की वृद्धि के लिए स्वयं जरूरी नहीं होती। यदि पौधों को जरूरी तत्व पानी में घोलकर दें, तो पौधों की जड़ें उन्हें प्रयोग करने में सक्षम होती हैं एवं पौधों की वृद्धि सामान्य रहती है।

आयुर्वेट प्रोग्रीन हाइड्रोपोनिक्स के लाभ

- इस तकनीक में जमीन एवं पानी की बहुत कम जरूरत पड़ती है।
- इस विधि में वातावरणीय प्रदूषण भी घट जाता है, क्योंकि पोषक तत्वों का उपयोग पूरी तरह होता है।
- पौधों में कीड़े और बीमारियां लगने की संभावना कम-से-कम होती है, क्योंकि इस विधि में पौधों का विकास नियंत्रित वातावरण में होता है।
- हाइड्रोपोनिक्स तकनीक आने वाले समय की जरूरत बनने वाली है क्योंकि बढ़ती हुई जनसंख्या के साथ फसलों का बढ़ता उत्पादन हमारी प्राथमिकता है।
- आयुर्वेट प्रोग्रीन हाइड्रोपोनिक्स तकनीक को आयुर्वेट के वैज्ञानिकों द्वारा निरंतर आगे बढ़ाने का कार्य किया जा रहा है और उन्हें इसके अनुकूल परिणाम भी मिल रहे हैं।

आयुर्वेट प्रोग्रीन हाइड्रोपोनिक्स के उपयोग

- हाइड्रोपोनिक्स तकनीक से धान की नर्सरी तैयार करना।
- हाइड्रोपोनिक्स तकनीक से साग-सब्जी के पौधों की नर्सरी।
- हाइड्रोपोनिक्स तकनीक से औषधीय व मसाले वाले पौधों की नर्सरी।
- हाइड्रोपोनिक्स तकनीक से हरे चारे का उत्पादन।
- हाइड्रोपोनिक्स तकनीक से व्हीट ग्रास का उत्पादन।

गाय भैंसों मे गर्भपात एक आम समस्या

-डॉ. मधु शिवहरे, डॉ. माधुरी धुर्वे, डॉ. दीपिका, राहुल चौरसिया

विभिन्न बीमारियाँ गर्भावस्था के दौरान पशुओं को प्रभावित करती हैं और गर्भावस्था की सामान्य प्रगति को बाधित करती हैं, जिसमें से गर्भपात एक प्रमुख कारण है। पशुओं में गर्भधारण के बाद किसी भी अवस्था में भ्रूण की मृत्यु हो जाना या किसी कारण से गर्भ को फेंक देना तो उसे गर्भपात कहते है, गर्भधारण के शुरुआती दिनों में गर्भपात का पता नही चलता है।

यौवन अवस्था प्राप्त करने के बाद पशु प्रजनन चक्र से गुजरता है और गर्भावस्था को प्राप्त करता है, गर्भावस्था अवधि के दौरान पशुओं की विशेष देखभाल और प्रबंधन की आवश्यकता होती है। विभिन्न बीमारियाँ गर्भावस्था के दौरान पशुओं को प्रभावित करती हैं और गर्भावस्था की सामान्य प्रगति को बाधित करती हैं, जिसमें से गर्भपात एक प्रमुख कारण है। पशुओं में गर्भधारण के बाद किसी भी अवस्था में भ्रूण की मृत्यु हो जाना या किसी कारण से गर्भ को फेंक देना तो उसे गर्भपात कहते है, गर्भधारण के शुरुआती दिनों में गर्भपात का पता नही चलता है।

गाय और भैंसों में गर्भपात के कई कारण होते हैं, जो मूलतः दो प्रकारों में विभाजित किये जाते हैंः (1) संक्रामक कारण , (2) असंक्रामक कारण।

1. संक्रामक कारणः

(क) जीवाणु कारणः 1) विब्रिओसिस, (2) ब्रूसेलोसिस, (3) लेप्टोस्पायरोसिस, (4) लिस्टरियोसिस, (5) तपेदिक क्षय रोग, (6) कम्पायलोबैक्टीरियोसिस (7) माइकोप्लाजमोसिस

(ख) विषाणु कारणः 1) संक्रामक पस्चयुल वल्वोवैजिनाइटिस (आइपीवी), 2) गोजातीय वायरल डायरिया-म्यूकोजल रोग (बीवीडी-एमडी)

(ग) क्लैमाइडियल गर्भपात (घ) फफूंदी रोग के कारण गर्भपात

(ड) प्रोटोजोल कारणः 1) ट्राइकोमोनियासिस 2) नीयोस्पोरियोसिस

2. असंक्रामक कारणः

क) सायन, ड्रग्स, धातुएं-आर्सेनिक, नाइट्रेट जहर और जहरीले पौधे जैसे लोको-वीड्स, पाइन वीड्स या अन्य जहरीली खरपतवार

ख) हार्मोनल कारण ग) पोषण संबंधी कारण

घ) शारीरिक कारण ङ) आनुवांशिक क्रोमोसोमल

कारण : गर्भपात के कारण बछड़े और दुग्ध उत्पादन का नुकसान होता है, जिससे किसानों की आर्थिक स्थिति कमजोर हो जाती है और पशुओं में बांझपन की समस्या उत्पन्न होती है। गर्भपात के संक्रामक कारक एक पशु से दूसरे में रोगों के प्रसार के लिए जिम्मेदार होते हैं और पशुओं के समूह में गर्भपात के तूफान (एक साथ कई पशुओं में गर्भपात) का कारण बनते हैं। इस प्रकार, गर्भावधि के दौरान पशुओं की देखभाल करना और डेरी किसानों के लाभ के लिए, गर्भपात को रोकना अति महत्वपूर्ण है।

गर्भपात के मुख्य संक्रामक कारण इस प्रकार के रोग संक्रमण कृत्रिम गर्भाधारण या प्राकृतिक सम्भोग से फैलते हैं। एक

विशिष्ट संक्रमण पूरे समूह को प्रभावित कर सकता हैं। इसमें ब्रुसलोसिस, केम्पाइलोबैक्टेरिओसिस, ट्राइकोमोनीओसिस, आईबीआर-आइपीबी संक्रमण शामिल हैं।

जीवाणु कारणः

क. ब्रूसेलोसिस-

कारणः - यह बीमारी, बैंग की बीमारी, माल्टा बुखार, क्रीमिया बुखार, रॉक बुखार और जिब्राल्टर बुखार के रूप में भी जानी जाती है। मवेशियों और भैंसों में यह रोग ब्रूसेला अबोरट्स जीवाणु के कारण होता है।

लक्षणः- गर्भपात गर्भावस्था की तीसरी तिमाही के दौरान होता है फिर पशु स्थायी वाहक के रूप में कार्य करता है, क्योंकि यह जीवाणु पूरे जीवन के लिए पशु के शरीर में बना रहता है और समूह के अन्य पशुओं और मनुष्यों को भी संक्रमण हो सकता हैं। यह एक जूनोटिक (पशुओं से मनुष्य में फैलने) वाला रोग हैं, संक्रमण का प्रमुख मार्ग संक्रमित भोजन और पानी के माध्यम से होता हैं। संक्रमण का प्रमुख स्रोत गर्भपात पीड़ित पशु होता हैं, जिनसे भ्रूण, नाल, भ्रूण तरल पदार्थ और दूध अत्यधिक दूषित होते हैं जो दूसरे पशुओं तक रोग फैलाते हैं। यदि कच्चे दूध का सेवन किया जाता है, तो मनुष्यों में भी बीमारी हो जाती है। यह जीवाणु बरकरार त्वचा के माध्यम से भी शरीर में घुस सकती है। पशुओं में प्राकृतिक संभोग के कारण यह रोग नहीं फैलता है, क्योंकि गर्मी के समय योनि की दीवार बहुरेखित स्तरीकृत होती है, इसलिए जीवाणु प्रवेश नहीं कर सकता है और दूसरा, यह जीव गैर गतिशील भी होता है। कृत्रिम गर्भाधान में वीर्य को सीधे गर्भाशय में डाला जाता है और यदि वीर्य ब्रूसेला जीवाणु से संक्रमित होता है, तो संक्रमण का कारण बनता है। इसके बाद, यह प्लेसेंटा (नाल/जेर) की सूजन का कारण बनता है और बाद में गर्भपात होता है। गर्भपात के कुछ दिनों के बाद, जीव गर्भाशय और गर्भाशय के निर्वहन से गायब हो जाते हैं और लसीका (लिम्फ) नोड्स में स्थानीयकृत हो जाते हैं।

रोग के मुख्य लक्षणों में गर्भावस्था की तीसरी तिमाही में गर्भपात एवं गर्भपात के सभी मामलों में जेर का रुकना शामिल हैं। जेर सूखी, चमड़े जैसी और बीच-बीच में पीले रंग की दिखाई देती है। अधिकांश मामलों में गर्भपात के तुरंत बाद भ्रूण मर जाता है या मरा हुआ पैदा होता है?

निदानः-

- पुराना रिकॉर्ड और लक्षण
- अंतिम तिमाही में गर्भपात और जेर का रुकना
- दूध रिंग टेस्ट यह टेस्ट समूह में ब्रुसेलोसिस के निदान के लिए उपयोग किया जाता है।
- सीरम एग्लूटीनेशन टेस्ट

रोकथाम और नियंत्रणः

- पशुओं में संक्रमण के उपरांत इस बीमारी का कोई इलाज नही है, लेकिन इसे फैलने से रोका जा सकता है।
- इसे उचित स्वास्थ्य परिस्थितियों को बनाए रखने से रोका जा सकता है।
- टेस्ट और हटाने या संक्रमित पशुओं के अलगाव की नीति
- ब्रूसेला एस-19 लाइब टीके के साथ टीकाकरण करके, नर और गर्भवती पशुओं को टीका नहीं लगाया जाता है। यह गर्भवती पशुओं में गर्भपात और पुरुषों में वृषण की सूजन का कारण हो सकता है।

लेप्टोस्पायरोसिस

कारणः-लेप्टोस्पायरोसिस मवेशियों और अन्य स्तनधारियों का एक महत्वपूर्ण जूनोटिक (पशुओं से मनुष्यों में फैलने वाला) रोग है और लेप्टोस्पाइरा नाम के जीवाणु के कारण होता है।

लक्षणः-संक्रमण त्वचा, आँखों, मुंह या नाक की झिल्ली के माध्यम से प्रवेश कर सकते हैं। यह प्राकृतिक सम्भोगिक क्रिया के बाद वीर्य में प्रसारित होता है। जीवाणु विशेष रूप से मूत्र में स्त्रवित होता है और जो संक्रमण के स्रोत के रूप में कार्य करता है। हेपेटाइटिस, नेफ्रैटिस (गुर्दे का संक्रमण) और लहू मुतना हो सकता है तथा गर्भपात गर्भावस्था के 6 महीने के बाद सबसे अधिक होता है।

निदानः-गाय एवं भैंस में लेप्टोस्पायरोसिस का निदान ब्रूसेलोसिस से मुश्किल होता है।

- पशु विकृति विज्ञान विशेषज्ञ की सलाह से निदान सरल होता है।
- नमूनों की सिल्वर स्टैनिंग निदान मैं मदद कर सकता हैं।
- कोशिका समागमन परीक्षण (केपिलरी टेस्ट) निदान के लिए प्रयोग किया जाता है।

उपचारः- लेप्टोस्पायरोसिस के नियंत्रण और उपचार को स्वच्छता, टीकाकरण और एंटीबायोटिक उपचार द्वारा पूरा किया जा सकता है।

लेप्टोस्पायरोसिस के तीव्र चरण के उपचार में एंटीबायोटिक दवाओं की बड़ी खुराक पेनिसिलिन (3 मिलियन यूनिट), और स्ट्रेप्टोमाइसिन (5 ग्राम) सहित दो बार प्रतिदिन शामिल है।

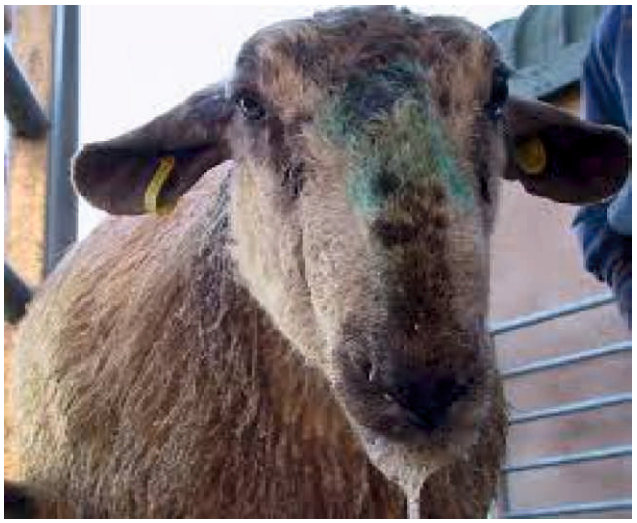

लिस्टरियोसिसः

कारणः- लिस्टिरिया मोनोसाइटाजिन्स जीवाणु मुख्य रूप से भेड़ और मवेशियों में केंद्रीय तंत्रिका तंत्र का रोगजनक है, जिसमें यह एन्सफेलाइटिस का कारण बनता है। लिस्टिरिया मोनोसाइटॉजिन्स वातावरण में सर्वव्यापी है। मिट्टी, सीवेज का प्रवाह, पशु बाड़ा और खाद्य पदार्थों में यह मौजूद रहता हैं।

लक्षणः-गर्भपात के मामलों में संक्रमण का स्रोत घास के साइलेज हैं, जो मोटे तौर पर मिट्टी से दूषित होती है और कम सूखे पदार्थ की सामग्री होती है या अपर्याप्त किण्वन से गुजर रहा होता है। गर्भपात आम तौर पर गर्भावस्था के अंतिम तीन माहों में होते हैं। लिस्टरियोसिस से ग्रसित पशु को एक तरफ का लकवा रोग हो जाता है, जिसकी वजह से पशु का एक तरफ का कान व आंख काम नहीं करते हैं तथा पशु खड़ा रहकर एक तरफ से चक्कर लगाता रहता है।

निदानः-

- गर्भावस्था के अंतिम काल में गर्भपात होना।
- बच्चे के दिमाग में फोड़ा मिलना।

रोकथाम एवं उपचारः-

- साइलेज को सही प्रकार से बनायें।
- रोगी पशु को दूसरे पशुओं से अलग रखें।
- रोगी पशु का उपचार टेट्रासाइक्लिन एंटीबायोटिक से करवायें।

तपेदिक क्षय रोग (टीबी)

कारणः- यह मायकोबैक्टीरियम बोविस नामक जीवाणु के कारण होता है। यह मुख्य रूप से संक्रमित भोजन या पानी से संचारित होता है। यह प्राकृतिक संभोग के द्वारा भी संचारित होता है।

लक्षणः- संक्रमण के बाद, पशु काफी कमजोर हो जाता है और उसकी पसलियाँ दिखने लगती हैं। गर्भाशय से पीले रंग का स्त्राव देखा जाता हैं। क्षय रोग से गाय एव भैंस दोनों में गर्भपात गर्भावस्था के किसी भी काल में हो सकता है।

रोकथाम एव नियंत्रण :-

- कोई इलाज नहीं है।
- इसे केवल उचित स्वच्छ उपायों को अपनाने से रोका जा सकता है।
- ग्रसित पशु को बाकी पशुओं से अलग रखना चाहिये।

कम्पायलोबैक्टीरियोसिस (विब्रिओसिस):

कारणः- यह कैम्पय्लोबक्टेर फीटस उपप्रजाति वेनेरेलिस नामक जीवाणु की वजह से होने वाली मवेशी की एक मस्तिष्क की बीमारी है। सांड इस रोग के लिए स्थायी वाहक का काम करते हैं। वे संभोग के दौरान मादा से मादा पशु को संचारित करते हैं। यह जीवाणु मादा जननांग, नाल और सांड के वीर्य में पाया जाता है। यह संक्रमित सांड से प्राप्त वीर्य के कृत्रिम गर्भाधान द्वारा भी मादा पशुओं में फैल सकता है।

लक्षणः- जब पशुओं के समूह में संक्रमण होता है, गर्भावस्था के शुरूआती दिनों में भ्रूणिक मृत्यु के बाद मादा गर्मी/मद अवस्था में लौट जाती है जो गर्मी/मद के 25 दिनों से अधिक समय पर अनियमित होती है

- संक्रमित सांड से पहली बार ब्याने वाली मादाओं में कम

गर्भाधान की दर और गर्मी मद पर अनियमित काल बाद वापसी होती है। इस रोग में प्रारंभिक भ्रूण मृत्यु, बांझपन और लंबे समय तक गर्भ ना ठहरना मुख्य लक्षण होते हैं।

निदानः-

- लम्बे समय से गायों के समूह में बाँझपन
- 3-4 महीने पर गर्भपात
- एलाइजा टेस्ट
- नमूनों से जीवाणु की लेबोरेट्री में पहचान

रोकथाम एव उपचारः-

- ग्रसित पशुओं को 4-6 महीने तक प्रजनन से आराम ।
- झुण्ड में नये व युवा सांड का उपयोग।
- सांड की लगातार 6 महीने के अन्तराल पर जाँच।

माइकोप्लाजमोसिसः

कारणः-यह माइकोप्लाज्मा बोवीजिनेटालियम जीवाणु के कारण होता है और संक्रमित वीर्य के साथ कृत्रिम गर्भाधान द्वारा प्रेषित होता है। इस रोग को दानेदार या नोडयुलर वुल्वो-वैजीनाटाइटिस के रूप में भी जाना जाता है।

लक्षणः- योनि में विशेष रूप से भगशेफ के आसपास 1-3 मि.मी. व्यास के संक्रमण फोड़ों का गठन हो जाता हैं। पशु योनि परीक्षण के साथ व संभोग के बाद दर्द महसूस करते हैं। इस बीमारी में गर्भपात गर्भावस्था के 5-7 महीनों के दौरान होता है।

रोकथामः- प्राकृतिक संभोग से बचने और रोग मुक्त तथा एंटीबायोटिक उपचारित वीर्य के साथ कृत्रिम गर्भाधान करने से इस रोग को रोका जा सकता है।

विषाणु कारणः

संक्रामक पस्चयुलर वल्वोवैजिनाइटिस (आइपीवी)

कारणः- यह बोवाइन हर्पीस वायरस-1 (बीएचवी-1) के कारण होता है। यह मवेशियों के एक तीव्र श्वसन रोग का कारण बनता है। जननांग प्रणाली की बीमारी संक्रामक पस्चयुलर वल्वोवैजिनाइटिस (आइपीवी), वैसिक्युलर वैनियरयल रोग और कॉयटल वैसिक्युलर एकशनथीमा के रूप में जाना जाता है। बीएचवी -1 बीमारी के जननांग प्रकार के साथ साथ श्वसन रोग का भी कारण बनता हैं, हालांकि बीमारी के दोनों रूप आमतौर पर स्वतंत्र रूप से होते हैं बीएचवी -1 भी गर्भपात का कारण बनता हैं, जो सामान्यतः बीमारी के जननांग रूप से श्वसन के बाद होता हैं।

लक्षणः- बीएचवी-1 प्रथम बार ग्रसित होने वाली मादाओं और गायों में बांझपन के साथ भी जुड़ा हुआ है। जननांग रूप गर्मी के समय मिलान, दूषित बाड़ा और आपसी शारीरिक लड़ाई द्वारा संचारित होता है। गर्भपात 4 महीने से लेकर 8 महीने की गर्भावधि तक होता है।

रोकथामः- जननांग घाव स्वत ठीक हो जाते हैं, इसलिए कोई इलाज आवश्यक नहीं है।

- संक्रमित पशुओं को पृथक किया जाना चाहिए।
- मादा पशुओं को 6 महीने की आयु में जीन एटीन्यएई टडे वैक्सीन के साथ टीका लगाया जाना चाहिए, इसके बाद वार्षिक टीकाकरण किया जाना चाहिए।
- गर्भवती पशुओं को किल्ड वैक्सीन के साथ टीका लगाया जाना चाहिए।

गोजातीय वायरल डायरिया-म्यूकोजल रोग (बीवीडी-एमडी)

कारणः- बीवीडी विषाणु एक पेस्टी विषाणु है।

लक्षणः- रोग की पहचान तेज बुखार, पानी जैसे दस्त, नाक से स्राव, मुँह के छाले और लंगड़ापन द्वारा की जाती है। बीवीडी वायरस से दूषित बीर्य के साथ कम गर्भधारण दर होती हैं. गर्भपात गर्भावस्था के किसी भी स्तर पर हो सकता है। अधिकांश नुकसान तीसरे तिमाही से पहले होता है। गर्भ के 5-6 महीने से दिमाग और आँख के जन्मजात असामान्यताओं वाले बछड़ों का गर्भपात या जन्म हो सकता है।

क्लैमाइडियल गर्भपात

कारणः- क्लैमाइडिया सितासाईं नर और मादा जननांग मार्ग

दोनों का एक रोगाणु है। प्रभावित सांड के वीर्य में कभी-कभी जीव पाया जाता है। विशेष रूप से, गर्भपात नैदानिक संकेतों के बिना गर्भ के अंतिम तिमाही के दौरान होता है। गर्भपात मौसमी होते हैं।

लक्षण:- गर्भपात के लिए जोखिम के समय पशुओं को 6 महीने से कम गर्भवती होना चाहिए। जेर के बीच कुछ क्षेत्रों का मोटा होना, चमड़े और लाल सफदे अपारदर्शी मलिनकरण और एडिमा (सूजना) काफी आम है। एक बार गर्भपात होने के बाद पशु प्रतिरक्षा करता है, इसलिए सबसे बड़ा जोखिम पहली बार ब्याने वाली मवेशियों को होता है।

फफूंदी रोग के कारण गर्भपात

कारण:- यह म्यूकोर, एब्सिडिया, राइजापेस और एस्परजिलस जैसे कवक, फफूंदी के कारण होता है। यह आमतौर पर सर्दी के मौसम के दौरान घास या साइलेज खाने के कारण होता है, क्योंकि साइलेज और घास में कवक बहुत अच्छी तरह से पनपती है।

लक्षण:- संक्रमण होने पर गर्भावस्था के 4-6 महीनों के दौरान यह गर्भपात का कारण बनता है। गर्भपात के उपरांत चमड़ी पर दाद के आकार के छल्ले प्रतीत होते है।

निदान:-भ्रूणया नाल से फंगल कवक हाइफा के प्रदर्शन से निदान किया जा सकता है।

उपचार:- इसे माइकोस्टाटिन देकर इलाज किया जा सकता है।

प्रोटोजोअल कारण

ट्राइकोमोनियासिस

कारण:-यह एक यौन रोग है जो संभोग के दौरान नर से मादाओं में संचारित होता है। कारक जीव ट्राइकोमोनास फीटस नामक एक परजीवी है।

लक्षण:-यह गर्भावस्था के शुरुआती दिनों में भ्रूण मृत्यु का कारण बनता है, जिससे मादा पशु गर्मी/मद को अनियमित समय बाद लौटता है, हालांकि कुछ प्रदर्शन सामान्य या छोटा भी होता है। यह रोग प्रारंभिक भ्रूण मृत्यु दर, प्रारंभिक गर्भपात(2-4 महीने), गर्भाशय की सूजन और बांझपन से जुड़ा होता है।

निदान:-ट्राइकोमोनियासिस का एक सकारात्मक निदान, मादा पशुओं से प्राप्त नमूनों से, गर्भस्था भ्रूण और पेट के ऊतकों से किया जाता है। नमूने का सबसे अच्छा स्रोत भ्रूण झिल्ली या एक गर्भपात हुए भ्रूण के अंगों, विशेषकर पेट है।

उपचार व रोकथाम:- कृत्रिम गर्भाधान द्वारा मादा पशुओ का गर्भित करवाये

- पुराने बैलों की जगह युवा नर पशुओं का उपयोग करना।
- रोग पीड़ित मादा पशुओं को 4–6 महीने के लिए प्रजनन से आराम देना।

नीयोस्पोरियोसिस

कारण:-निओस्पोरा कैनाइनम एक हाल ही में खोजा गया कोशिका में पाया जाने वाला, कोक्सीडियन परजीवी है। यह गर्भपात या फिर दुनिया भर में मवेशियों, भेड़, बकरी, घोड़े और हिरण में नवजात शिशुओं में नाडी तथा मासपेशियों में पक्षाघात पैदा करने के लिए जाना जाता है।

रोकथाम:- इस बीमारी में भ्रूण को नुकसान, भ्रूण ममीकरण आदि विशेषता है। अधिकांश मामलों में गर्भपात गर्भ के 5-6 महीने में होता है। वर्तमान में नीयोस्पोरियासिस के लिए कोई प्रभावी उपचार नहीं है। रोकथाम के लिए, कुत्तों की पशु बाड़े या चारे तक पहुँच नहीं होनी चाहिये क्योंकि यह रोग कुत्ते द्वारा आगे फैलता है। भोजन को दूषित होने से बचाने के लिए जंगली पक्षियों, आंगतुकों और अन्य जंगली जानवरों को पशुओं के चारे तक नही पहुँचने देना चाहिए।

□□

-वेटरनरी कॉलेज, महू (म.प्र.)

एक्सापार

AYURVET

प्रसव पश्चात् गर्भाशय की सफाई एवं पुनः गाभिन बनाने हेतु

ब्याने के बाद की समस्याओं का अत्यंत प्रभावकारी उपाय

- गर्भाशय के संक्रमण से बचाए एवं संपूर्ण सफाई करे
- गर्भाशय के संकुचन द्वारा जेर गिराने में सहायक
- गर्भाशय को समयानुसार पुनः स्थापित करे

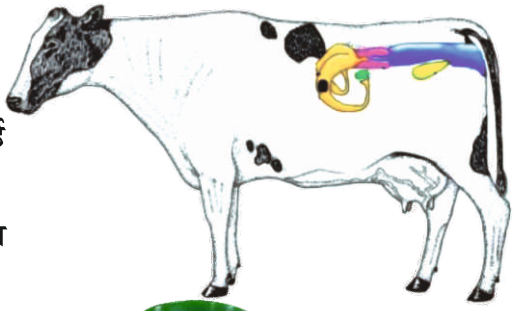

- रीपिट ब्रीडिंग एवं बांझपन की समस्या से बचाए
- ब्याने के बाद समयानुसार अगले गर्भधारण के लिए तैयार करे

1 लीटर बोतल

500 मि.ली. पैट बोतल

4 बोलस की एक स्ट्रिप

पशुचिकित्सक से जुड़े सवाल

आप पूछे विशेषज्ञ बताएं

इस स्तंभ के अंतर्गत आपके सवाल होंगे तो हमारे विशेषज्ञ के जवाब, हमें पत्र लिखें। आपसे अनुरोध है कि पत्र टाइप किया हुआ अथवा साफ-साफ लिखा हो। पहले अपना नाम लिखिए, पता लिखिए और फिर लिखिए सवाल, साथ ही आप अपनी फोटो भी भेज सकते हैं। हमारे इस बार के विशेषज्ञ हैं डॉ. पी. के. श्रीवास्तव, वरिष्ठ पशुचिकित्सक

डॉ. पी.के. श्रीवास्तव
वरिष्ठ पशुचिकित्सक

प्रश्न 1. गर्मियों में पशु के खान-पान में क्या-क्या सावधानियां रखनी चाहिए?

रामफल, सहारनपुर

उ. 1. गर्मी में पशु के खान-पान में निम्न सावधानियां रखें :

- पशु को पानी 4-5 बार पिलाना चाहिए।
- पीने का पानी ठंडा व शुद्ध होना चाहिए।
- राशन में हरे चारे की थोड़ी मात्रा अवश्य हो।
- यदि चराने ले जाते हों तो सुबह और शाम को ही ले जाना चाहिए।
- पशु को लू लगने पर उचित इलाज करवाना चाहिए।

प्रश्न 2. पशु की अच्छी नस्ल की क्या पहचान है?

गुलाम मोहम्मद, पानीपत

उ. 2. अच्छी नस्ल के पशु के निम्न लक्षण होते हैं :

- थन बड़े तथा उल्टे कप के आकार के होने चाहिए।
- थनों पर दूध की नसें स्पष्ट दिखनी चाहिए।
- थन लटके हुए नहीं होने चाहिए।
- पशु का सिर बड़ा तथा माथा सपाट होना चाहिए।
- पशु के शरीर पर वसा (चर्बी) नहीं होनी चाहिए।

प्रश्न 3. मेरी भैंस का रंग धब्बेदार(चितकबरा) होता जा रहा है, उपाय बतायें?

सुकेश कुमार, कैथल

उ. 3. आपके प्रश्न से ऐसा प्रतीत हो रहा है कि भैंस के शरीर में मिलैनिन पिगमेंट की कमी हो गयी है। यह रोग कॉपर खनिज लवण की कमी से होता है। आप भैंस को सुबह-शाम धूप में बांधे व बाजार में उपलब्ध कॉपर सप्लीमेंट की उचित खुराक दें।

प्रश्न. 4 दोगली व बाहरी नस्ल क्या है?

सोनू, शामली

उ. 4 बाहरी नस्ल के पशु वे होते हैं, जिनकी उत्पत्ति हमारे देश से बाहर की होती है जैसे होल्सिटीन फ्रीजियन, जर्सी, ब्राउन स्विस। ये पशु दूध उत्पादन में तो अच्छे होते हैं, लेकिन इनमें बीमारियों के प्रति संवेदनशीलता भी ज्यादा होती है।

दोगली नस्ल के पशु वे होते हैं, जो देशी और बाहरी नस्लों का क्रास होते हैं। इन पशुओं का उत्पादन भी अच्छा होता है व उनका रख-रखाव भी आसान ही होता है। इन पशुओं की रोग प्रतिरोधक क्षमता ज्यादा होती है।

प्रश्न 5 अधिकतर पशुओं में बीमारियां ब्यांत के बाद ही क्यों होती हैं?

हरजीतकुमार, भिवानी

उ. 5 ब्याने के तुरंत बाद पशु तनाव में आ जाता है। पशु की ऊर्जा की आवश्यकता बढ़ जाती है। अतः पशु का ऊर्जा स्तर ऋणात्मक होने पर तथा पशु की रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाने के कारण ही पशु ब्याने के बाद बीमारियों का शिकार ज्यादा होता है।

प्रश्न 6 भैंस के गले के निचले हिस्से में सूजन का इलाज बताइए?

ज्ञानचंद, झज्जर

उ. 5 भैंस के गले के निचले हिस्से में सूजन का कारण पेट में कीड़ों की उपस्थिति (विशेषकर फैशिओला परजीवी) होता है। आप भैंस को उचित परजीवी नाशक दें। पशु आहार तीन किलो सुबह-शाम दें। तरल कैल्शियम केवल उसी पशु को दिया जाता है, जो दूध देता है। अगर आपका पशु दूध नहीं देता है, तो उसे तरल कैल्शियम देने का कोई लाभ नहीं होता है, अपितु पशु का नुकसान जरूर होता है। तरल कैल्शियम की कमी से न केवल आपका पशु बैठ गया, अपितु उसने गरमाने के लक्षण भी नहीं दिए। मैं पहले भी आपको बता चुका हूं कि अच्छे पशु का प्रसूति के तीन महीने में कृत्रिम गर्भाधान हो जाता है। जब आपका पशु स्वस्थ हो जाए, तब आप इसकी जांच करवा कर इसे गरमाने की दवाई दें। आगे से ध्यान रखें कि जैसे ही आप प्रसूति के बाद अपने पशु के कीड़े निकालें, तो पशु के आहार(दलिया) में 100 प्रतिशत तरल कैल्शियम शुरू कर दें।

पशुपालन में वर्षभर के कार्यों की सारणी

-दिपिन चन्द्र यादव, देवेन्द्र सिंह बिढाण एवं विशाल शर्मा

पशुपालन व्यवसाय जीविकोपार्जन का सबसे बड़ा साधन है। इसे व्यवसाय के रूप में अपनाने से किसानों को भारी फायदा हो सकता है। पशुपालन करते समय पशुओं से सम्बन्धित कई बातों का भी ध्यान रखना पड़ता है, जैसेकि पशु स्वास्थ्य, रोग, चारा इत्यादि। पशुपालन कैलेंडर में विभिन्न महीनों में पशुपालन से सम्बन्धित आवश्यक कार्यों की जानकारी दी गई है। कोशिश की गई है कि पशुपालकों को पशुओं के रखरखाव, उनके चारे, दवाइयों आदि की आवश्यक जानकारी दी जाए, ताकि वे अधिक लाभ अर्जित कर सकें।

पशुपालन के विभिन्न कार्यों को योजनाबद्ध तरीके से सम्पन्न करना ही पशु-प्रबन्धन का मुख्य उद्देश्य है। उचित समय व सही तरीके से कार्य पूर्ण न कर पाना पशुपालकों के लिए कई प्रकार की समस्याएं उत्पन्न कर देता है जैसे कि विभिन्न बीमारियां और उत्पादन क्षमता में कमी आदि। इस प्रकार से पशुपालकों को आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ता है। पशुपालकों के लाभ के लिए वर्ष भर की गतिविधियों को सारणीगत करने का प्रयास किया गया है।

जनवरी माह

1. पशुओं को ठंड से बचाने के लिए उचित प्रबन्ध करें।
2. पशु-आवास एवं बिछावन को साफ-सुथरा एवं सूखा रखें।
3. हमेशा पशुओं के लिए ताजा और स्वच्छ पीने का पानी सुनिश्चित करें।

4. ठंड लगने की स्थिति में अथवा अन्य किसी बीमारी की आशंका होने पर पशुचिकित्सक से तुरन्त सम्पर्क करें।
5. अधिक बरसीम खिलाने से पशुओं में अफारा हो सकता है।
6. पशु-आवास में धूप का आगमन सुनिश्चित करना चाहिए।

फरवरी माह

1. तापमान परिवर्तन के प्रभाव से पशुओं का बचाव करें।
2. चारे की फसलों जैसे बरसीम, जई आदि की उपयुक्त अवस्था पर कटाई करें।
3. चारा-फसल की अच्छे उत्पादन के लिए समयानुसार सिंचाई करें।
4. पशुओं को रात्रि में भूसा/तूड़ी अवश्य दें, जिससे शारीरिक तापमान नियंत्रण में सहायता मिलती है।
5. पशुशाला में हवा का आगमन सुचारू रूप से होना चाहिए।

मार्च माह

1. पशु-आवास में कीचड़ अथवा नमी से बचाव करना चाहिए।
2. खरीफ में हरे चारे की उपलब्धता सुनिश्चित करने हेतु फसलों की बिजाई करें।
3. चारा-फसलों से अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए अच्छी किस्म के बीज का ही प्रयोग करें।

अप्रैल माह

1. पशु का तेज धूप से बचाव करें।
2. मुंह-खुर के रोग का टीकाकरण करवायें।
3. गेहूं के भूसे को यूरिया से उपचारित करके उसकी पौष्टिकता बढ़ा सकते हैं।
4. हरे चारे का संरक्षण (हे, साइलेज) आदि में किया जा सकता है, जो हरे-चारे की कमी के समय उपयोगी होते हैं।

मई माह

1. गलघोंटू रोग से बचाव के लिए पशुओं में टीकाकरण करवायें।
2. पशुओं का लू से बचाव करें।
3. पशुओं को ठंडी जगह पर रखें तथा आस-पास वृक्ष होने चाहिए।
4. दुग्ध उत्पादन की क्षमता बनाये रखने के लिए नियमित संतुलित आहार व खनिज़ मिश्रण दें।

जून माह

1. पशु के शरीर का तापमान नियंत्रित रखने के लिए भैंसों को दिन में 2-3 बार नहलाएं।
2. पशुओं को आहार सुबह जल्दी तथा शाम को या रात को देना चाहिए।
3. पीने का पानी ठंडा व छायादार जगह पर होना चाहिए।
4. पशुशाला खुली व हवादार होनी चाहिए।
5. गर्मियों में मादा-भैंसों को सुबह-शाम गर्मी (मद) के लिए जरूर देखना चाहिए।

जुलाई माह

1. ब्याने वाले पशु का विशेष ध्यान रखें।
2. दुधारू पशुओं का ब्याने के बाद दुग्ध ज्वर, कीटोसिस आदि से बचाव करें।
3. पशुओं एवं नवजात बच्चों का आन्तरिक एवं बाह्य परजीवियों से बचाव करें।
4. पशुशाला में कीटाणुनाशक दवा का इस्तेमाल करें।

अगस्त माह

1. बरसात के मौसम में पशु-आवास में साफ-सफाई पर विशेष ध्यान दें।
2. पशुओं को पीने का साफ पानी सुनिश्चित करवाना चाहिए।
3. पशुओं के खुरों की जांच करते रहे व 5-7 दिन के अन्तराल पर लाल-दवाई से साफ करें।
4. मक्खी, मच्छर व अन्य परजीवियों का उपचार व दवाई का छिड़काव पशुचिकित्सक की सलाह पर समय-समय पर करें।

सितम्बर माह

1. पशुओं में गर्मी के लक्षणों पर गौर करना चाहिए तथा उचित समय पर गाभिन करायें।
2. पशुओं को एक सप्ताह से ज्यादा बना हुआ तथा नमी वाला चारा न खिलायें।
3. नवजात पशु के खान-पान पर विशेष ध्यान दें व उपचार

पशुधन संबंधित वर्षभर ध्यान देने योग्य कार्य

- पशुओं को आयु एवं आवश्यकता के अनुसार संतुलित आहार प्रदान करें।
- दुधारू पशुओं का थनैला रोग से बचाव के लिए उचित प्रबन्ध करें।
- आंतरिक एवं बाह्य परजीवियों से बचाव के लिए नियमित अन्तराल पर दवा का प्रयोग करें।
- पशु के गर्मी के लक्षणों पर विशेष ध्यान दें तथा समय पर प्राकृतिक अथवा कृत्रिम गर्भाधान करवायें।
- दूध दोहने के लिए पूर्ण-हस्त विधि का ही प्रयोग करें।
- पशुओं को आहार में खनिज मिश्रण अवश्य दें।
- ब्याने वाले पशुओं का विशेष ध्यान रखें।
- नवजात पशु को जन्म के 1-2 घंटे के भीतर खीस अवश्य पिलायें।
- नवजात बच्चे की नाल को 1.5 से 2.0 इंच की दूरी पर बांध कर काटना चाहिए तथा उस पर टिंक्चर आयोडिन का प्रयोग करें।
- गाभिन पशुओं का तीन माह बाद पशुचिकित्सक से परीक्षण करवायें।
- तीन बार से ज्यादा गर्मी में आने पर भी गाभिन न होने वाले पशुओं की जांच पशुचिकित्सक से करवायें।
- पशुशाला में महीने में एक बार कीटनाशक दवाओं से छिड़काव करना चाहिए। चरी तथा पानी की टंकी/होद को रोजाना साफ करना चाहिए तथा सप्ताह में एक बार चूना डालना चाहिए।
- बीमारी आने पर प्रभावित पशुओं को स्वस्थ पशुओं से अलग रखना चाहिए।
- गाभिन पशुओं को उचित व्यायाम करवाना चाहिए।
- शारीरिक भार-वृद्धि की दर ज्ञात करने के लिए कटड़े-कटड़ियां/बछड़े-बछड़ियों का वजन मापना जरूरी है।
- दूध निकालने से पहले थनों को जीवाणुनाशक दवा जैसे (लाल दवा) से धोकर साफ कपड़े से पोंछना चाहिए।
- भैंसों के खानपान का समय और आहार जब तक आवश्यक न हो परिवर्तित नहीं करना चाहिए और यदि आवश्यक हो तो धीरे-धीरे बदलें।
- किसी भी आपात स्थिति से निपटने के लिए पशु-चिकित्सक या पशु वैज्ञानिक से संपर्क करें।

पशु-चिकित्सक की देख-रेख में करें।

अक्तूबर माह

1. गलघोटू से बचाव के लिए पशुओं का टीकाकरण करवायें।
2. वातावरण परिवर्तन के कारण पशुओं का बीमारी के लक्षणों या बिगड़ते स्वास्थ्य के लिए दैनिक जांच की जानी चाहिए।
3. सर्दी प्रारम्भ होने से पहले स्वास्थ्य प्रबन्धन, पोषक व्यवस्था, खाद्य-सामग्री की लागत और पशुओं की उचित देखभाल सुनिश्चित करें।

नवम्बर माह

1. मुंह-खुर की बीमारी से बचाव हेतु पशु का टीकाकरण करवायें।
2. हवा, बरसात या ठंड की अवस्था में भूसे को बिछावन के रूप में इस्तेमाल कर सकते हैं।
3. गीले स्थान में बछड़े-बछड़ियां/कटड़े-कटड़ियां ठंड के तनाव से प्रभावित हो सकते हैं।

दिसम्बर माह

1. सर्दी से पशुओं का बचाव करने के लिए उत्तम प्रबन्ध करें।
2. पशुशाला का तापमान नियंत्रित रखें।
3. पशु के शरीर को बोरी/कंबल से ढ़क कर रख सकते हैं।
4. ठंड के मौसम के दौरान पैदा हुए नवजात पशुओं का विशेष ध्यान रखना चाहिए। □□

पशु उत्पादन एवं प्रबन्धन विभाग
लाला लाजपत राय पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, हिसार

डेरी सफलता की कुंजी
स्वस्थ पशु, खुशहाल किसान

बढ़ती गर्मी इंसान नहीं पशुओं के लिए भी बेहद नुकसानदायक होती है। अक्सर यह देखने में आता है कि दुधारू पशु अधिक गर्मी सहन नहीं कर पाते और गर्मी से उनकी दूध की उत्पादन तथा प्रजनन क्षमता दोनों ही प्रभावित होती हैं।

बढ़ती गर्मी इंसान नहीं पशुओं के लिए भी बेहद नुकसानदायक होती है। अक्सर यह देखने में आता है कि दुधारू पशु अधिक गर्मी सहन नहीं कर पाते और गर्मी से उनकी दूध की उत्पादन तथा प्रजनन क्षमता दोनों ही प्रभावित होती हैं। इस वर्ष भी गर्मी की शुरूआत हो गई है। ऐसे में जबकि तापमान 40 डिग्री सेंटीग्रेड से अधिक हो जाता है, तो दुधारू पशुओं के दुग्ध उत्पादन में भी कमी आ जाती है। अधिक तापमान के कारण पशु गर्मी (हीट) के लक्षण कम दिखाता है, जिसके परिणामस्वरूप समय पर गर्भाधान नहीं हो पाता। भैसों में यह समस्या और भी अधिक होती है।

पशुपालक भाइयों! क्या आप भी गर्मियों में दुधारू पशुओं को होने वाली इस समस्याओं और उसके समाधाान के बारे में जानते हैं?

हम पशुपालकों की जागरूकता के लिए समय-समय पर पशुपालकों से बातचीत करते हैं। हाल ही में भी हमने उत्तर भारत के कुछ राज्यों के किसानों से बात की, उनके अनुभवों को सुना और पाया कि :-

- आज डेरी व्यवसाय को तभी लाभदायक बनाया जा सकता है, जबकि पशु स्वस्थ रहें।
- स्वस्थ पशु से ही अधिक उत्पादन लिया जा सकता है।
- पशु के बीमार होने पर हम पर दोहरी मार पड़ती है। एक तो इलाज पर पैसा खर्च होता है, तो दूसरी ओर दुग्ध उत्पादन भी घट जाता है। इसीलिए इलाज से अच्छा है, सावधानी बरती जाए।
- बढ़ती गर्मी, हीट स्ट्रेस, पशु के एक से दूसरे स्थान पर ले जाना या फिर पशु पर अधिक दुग्ध उत्पादन लेने से बना दबाव आदि का पशु पर दुष्प्रभाव पड़ता है। ऐसे में, हम अपने पशुओं को **रेस्टोबल** देते हैं, जिससे पशु की रोग प्रतिरोधक क्षमता में सुधार होता है और पशु स्वस्थ रहता है।

- हम अपने दुधारू पशुओं को समय-समय पर **यकृफिट** देते हैं, जिससे पशुओं की लीवर प्रक्रिया में सुधार होता है, पशुओं को पेट के कीड़े की दवा देने की स्थिति में इसका लीवर पर कम प्रभाव पड़ता है और पशु की पाचन क्रिया में सुधार आता है।
- शरीर का तापमान सामान्य बनाए रखने के लिए पशु अपने शरीर द्वारा उत्पन्न ऊष्मा को कम करने की कोशिश करता है। इसके लिए पशु चारा खाना कम कर देता है। पशु की दुग्ध उत्पादन क्षमता घट जाती है। यदि इसके बाद भी पशु अपने शरीर के तापमान को बढ़ने से नहीं रोक पाता, तो वह तापमान के दबाव (हीट स्ट्रेस) में आ जाता है। दुग्ध काल के शुरू के दिनों में पशु नकारात्मक ऊर्जा (नेगेटिव एनर्जी बैलेंस) में होता है, तब यह दबाव और अधिक होता है। ऐसे में, पशु की भूख बढ़ाने, पाचन क्रिया को दुरुस्त करने, अपच की समस्या से निजात दिलाने एवं दुग्ध उत्पादन को बनाएं रखने के लिए **रुचामैक्स** एक बहुत ही बढ़िया उत्पाद है।

आपने देखा उपर्युक्त जागरूक पशुपालक किस प्रकार से अपने पशु को स्वस्थ रखकर, अधिक उत्पादन प्राप्त कर रहे हैं। आप भी इन पशुपालकों से मिली जानकारियों को अपनाकर अपने पशु को स्वस्थ रखकर अपने डेरी व्यवसाय को लाभकारी बना सकते हैं।

□□

गर्मियों में पशु प्रबंधन

हीट स्ट्रेस के दौरान गायों में सामान्य तापक्रम बनाए रखने के लिए खानपान में कमी, दुग्ध उत्पादन में 10 से 25 फीसदी की गिरावट, दूध में वसा के प्रतिशत में कमी, प्रजनन क्षमता में कमी, प्रतिरक्षा प्रणाली में कमी आदि लक्षण दिखाई देते हैं। गर्मियों में पशुओं को स्वास्थ्य रखने एवं उनके उत्पादन के स्तर को सामान्य बनाए रखने के लिए पशुओं की विशेष देखभाल की आवश्यकता होती है।

गर्मी के मौसम में पशुओं को अपने शरीर का तापमान सामान्य बनाएं रखने में काफी दिक्कतें आती हैं। हीट स्ट्रेस के कारण जब पशुओं के शरीर का तापमान 101.5 डिग्री फेरनेहाइट से 102.8 फेरनहाइट तक बढ़ जाता है, तब पशुओं के शरीर में इसके लक्षण दिखने लगते हैं। भैंसों एवं गायों के लिए थर्मोन्यूट्रल जोन 5 डिग्री सेंटीग्रेड से 25 डिग्री सेंटीग्रेड के बीच होता है। थर्मोन्यूट्रल जोन में सामान्य मेटाबोलिक क्रियाओं से जितनी गर्मी उत्पन्न होती है, उतनी ही मात्रा में पशु पसीने के रूप में गर्मी को बाहर निकालकर शरीर का तापमान सामान्य बनाए रखते हैं। हीट स्ट्रेस के दौरान गायों में

सामान्य तापक्रम बनाए रखने के लिए खानपान में कमी, दुग्ध उत्पादन में 10 से 25 फीसदी की गिरावट, दूध में वसा के प्रतिशत में कमी, प्रजनन क्षमता में कमी, प्रतिरक्षा प्रणाली में कमी आदि लक्षण दिखाई देते हैं। गर्मियों में पशुओं को स्वास्थ्य रखने एवं उनके उत्पादन के स्तर को सामान्य बनाए रखने के लिए पशुओं की विशेष देखभाल की आवश्यकता होती है।

प्रमुखतया दो वजह से होता है पशुओं पर गर्मी का प्रभाव

1. इनवायरमेंटल हीट
2. मेटावालिक हीट

सामान्यतया इनवायरमेंटल हीट की अपेक्षा मेटावालिक हीट द्वारा कम गर्मी उत्पन्न होती है, लेकिन जैसे-जैसे दुग्ध उत्पादन और पशु की खुराक बढ़ती है उस स्थिति में मेटावालिज्म द्वारा जो हीट उत्पन्न होती है वह इनवायरमेंटल हीट की अपेक्षा अधिक होती है। इसी वजह से अधिक उत्पादन क्षमता वाले पशुओं में कम उत्पादन क्षमता वाले पशुओं की अपेक्षा गर्मी का प्रभाव ज्यादा दिखाई देता है। इनवायरमेंटल हीट का प्रमुख स्रोत सूर्य होता है। अतः धूप से पशुओं का बचाव करना चाहिए।

गर्मी का पशु की शारीरिक क्रियाओं पर प्रभाव

अपने शरीर के तापमान को गर्मी में भी सामान्य रखने के लिए पशुओं की शारीरिक क्रियाओं में कुछ बदलाव देखने को मिलते हैं।

- गर्मी के मौसम में पशुओं की सांस लेने की गति बढ़ जाती है, पशु हाँफने लगते हैं, उनके मुंह से लार गिरने लगती है।

•पशुओं के शरीर में बाइकार्बोनेट आयनों की कमी और रक्त के पी.एच. में वृद्धि हो जाती है।

•पशुओं के रियुमन में भोज्य पदार्थों के खिसकने की गति कम हो जाती है, जिससे पाच्य पदार्थों के आगे बढने की दर में कम हो जाती है और रियुमन की फर्मेन्टेशन क्रिया में बदलाव आ जाता है।

•त्वचा की ऊपरी सतह का रक्त प्रभाव बढ़ जाता है, जिसके कारण आंत्रिक ऊतकों का रक्त प्रभाव कम हो जाता है।

• ड्राय मैटर यानी शुष्क इंटेक 50 प्रतिशत तक कम हो जाता है, जिसके कारण दुग्ध उत्पादन में कमी आ जाती है।

•पशुओं में पानी की आवश्यकता बढ़ जाती है।

गर्मियों में इन बातों का रखें ध्यान

•पशुओं को दिन के समय सीधी धूप से बचाएं, उन्हें बाहर चराने न ले जाएं।

•हमेशा पशुओं को बांधने के लिए छायादार और हवादार स्थान का ही चयन करें।

•पशुओं के पास पीने का पानी हमेशा रखें।

•पशुओं को हरा चारा खिलाएं।

•यदि पशुओं में असामान्य लक्षण नजर आते हैं तो नजदीकी पशुचिकित्सक से संपर्क करें।

•यदि संभव हो तो डेरी शेड में दिन के समय कूलर, पंखे आदि का इस्तेमाल करें।

•पशुओं को संतुलित आहार दें।

•अधिक गर्मी की स्थिति में पशुओं के शरीर पर पानी का छिड़काव करें।

(आयुर्वेट डेस्क)

आयुर्वेट का रूचामैक्स

-अनिरूद्ध शर्मा

आयुर्वेट ने पशु आरोग्य हेतु किए महान आविष्कार।
शोध एवं विकास द्वारा आयुर्वेद को बनाया आधार।।
आयुर्वेट के नाम से ही अभिप्राय इसका होता है साकार।
पशुपालन स्वास्थ्य का आयुर्वेदिक पद्धति से किया उपचार।।

आयुर्वेट के अनुसंधान से रूचामैक्स का किया निर्माण।
रूचामैक्स के सेवन से मिला पशुओं को शक्ति का बाण।।
आयुर्वेदिक औषधियों के सृजन से ही होता है इसका निर्माण।
पाचन क्रिया स्वस्थ बनाता करता पशुओं का जीवन निर्माण।।

गाय भैंस व घोड़े को हम जब रूचामैक्स खिलायेंगे।
पाचन तंत्र स्वस्थ कर वो रोगमुक्त हो जायेंगे।।
पाचन क्रिया की अग्नि को संतुलित इससे बनायेंगे।
पशुओं की शक्ति को हम निरंतर इससे बढ़ायेंगे।।

रूचामैक्स की शक्ति से पाचन तंत्र होगा मजबूत।
भूख बढ़ेगी भोजन पचेगा स्वास्थ्य होगा तंदुरूस्त।।
शक्ति बढ़ेगी पशुओं की पशु होंगे शक्तियुक्त।
उत्पादन बढ़ेगा पशु शक्ति से मानव होंगे अति संतुष्ट।।

प्रवासी किसानों की आर्थिक सहायता और विकास योजनाएं

आज के सामायिक एवं महत्वपूर्ण विषय "किसानों, प्रवासी मजदूरों और रेहड़ी वालों के लिए आर्थिक सहायता और उनके विकास की योजनाएं" परिचर्चा में श्री एम.जे. सक्सेना ने भाग लिया। वार्ता के प्रमुख अंश आपके सम्मुख प्रस्तुत हैं, ताकि आप भी इनसे लाभ उठा सकें।

प्रीति-किसान भाई खेती किसानी करने के साथ-साथ कोरोना महामारी से कैसे बचे रहें, आप क्या सलाह देना चाहेंगे।

श्री एम.जे. सक्सेना-कोरोना संकट से बचाव के लिए साफ-सफाई का विशेष ध्यान रखें। हमें कोरोना के संकट को हरा कर आत्मनिर्भर बनना है।

प्रीति-कृषि के साथ-साथ पशुपालन का व्यवसाय भी किसान भाई करते हैं। उनके लिए कुछ महत्वपूर्ण बातें बताइए।

श्री एम.जे. सक्सेना-पशुपालन कृषि का अभिन्न अंग है। किसान को पशुपालन से प्रतिदिन दैनिक आमदनी होती है। गर्मी का मौसम शुरू हो गया है। मौसम का मिजाज लगातार बदल रहा है। कभी तेज गर्मी, वर्षा, आंधी-ओले आदि पड़ रहे हैं। ऐसे में, किसान की भाषा में कहें तो आजकल पशुओं में हीट स्ट्रेस हो जाता है। पशुओं की सांस फूलती है। इससे बचाव के लिए पशुओं के लिए हरे चारे का इतंजाम करें। अफारा हो तो उसे निकट के पशुचिकित्सक को दिखाएं और पशु का पूरा ख्याल रखें।

प्रीति-देश की वित्त मंत्री द्वारा किसानों के कल्याण के लिए कौन-कौन सी राहत दी गई हैं?

श्री एम.जे. सक्सेना-कोरोना वैश्विक संकट है। आपने प्रधानमंत्री का संबोधन सुना। वित्त मंत्री की घोषणाएं सुनी। सबसे एक बात निकलकर आती है कि किसी को अगर सबल बनाना है तो उसे नई तकनीक एवं जानकारी दें, ताकि वह अपने पैरों पर खड़ा हो सके। किसान के लिए अनेक रियायती घोषणाएं की गई हैं, जिससे वह गांव में रहकर ही अनेक कार्य कर सकते हैं। उन्हें ऋण एवं अनेक रियायतें दी गई हैं। जैसे पशुपालन एवं मत्स्य पालन को किसान क्रेडिट कार्ड से जोड़ना एक अच्छा कदम है।

प्रीति-शहरों से पलायन करके जो श्रमिक, किसान एवं उनके परिवार के सदस्य अपने गांव में गये हैं। उनके सहयोग के लिए सरकार की क्या योजना है?

श्री एम.जे. सक्सेना-मजदूर परिवार सहित महानगर से गांव में पहुंच रहे हैं। यह आपातकालीन समस्या का कारण अनाज था। इसके लिए सरकार ने तत्काल कदम उठाते हुए कहा कि बिना जांच पड़ताल के गेहूं, चावल, दाल आदि उन्हें उपलब्ध करवाया जाए। कुछ पैसा भी उनके बैंक खातों में सीधा ट्रांसफर किया जा रहा है, ताकि उनके खाने की व्यवस्था हो सके। वह वहीं रहकर कोई काम कर सकें, इसके लिए मनरेगा में परिवर्तन किया गया है जैसे मनरेगा की समयावधि बढ़ाई गई है, जिसका लाभ राज्य सरकारों और प्रवासी मजदूरों को मिलेगा। सभी वर्गों किसान, मजदूर, खेतों में काम करने वालों के लिए मिनिमम वेजेस समान करने पर काम चल रहा है।

प्रीति-सरकार 25 लाख नए किसान क्रेडिट कार्ड बनवाने जा रही है। इसके द्वारा किसानों को अलग से क्या सहयोग मिलेगा?

श्री एम.जे. सक्सेना-इस योजना में दो लाख करोड़ का प्रावधान है, जिसमें ढाई लाख किसान लाभान्वित होंगे। जैसाकि मैंने पहले कहा कि पशुपालन व मत्स्य पालन को जो जोड़ा गया है, जिसका लाभ पशुपालकों व मत्स्यपालकों को भी मिलेगा।

प्रीति- वित्त मंत्री द्वारा छोटे व सीमांत किसानों को लाभ

पहुंचाने के उद्देश्य से फसल ऋण पर ब्याज में छूट देने की बात कही है और चार लाख तक ऋण किफायती दर पर मिलेगा इसका किसान भाई किस प्रकार लाभ ले सकते हैं?

श्री एम.जे. सक्सेना-एक योजना चल रही है, जिसके अंतर्गत स्वयं सहायता समूह बनाकर किसान भाई-बहनें आधुनिकीकरण या वर्किंग कैपिटल के लिए फार्मिंग प्रोड्यूसर आर्गनाइजेशन बना सकते हैं। इसको लागू करने की बात की जा रही है, इसमें वह उत्पादन ही नहीं करेंगे, बल्कि मार्केटिंग एवं विक्रय भी करेंगे। जैसेकि वह शुद्ध सरसों का तेल निकालकर शहरों में बेच रहे हैं। उसकी खल को भी काम में ले रहे हैं। सरकार द्वारा एफपीओ को आधुनिक बनाने के लिए अनेक सरकारी संगठनों जैसे आईसीएआर और कृषि मंत्रालय की अनेक प्रयोगशालाओं में प्रशिक्षण दिया जा रहा है, ताकि वह उत्पादन के साथ-साथ पैकिंग एवं मार्केटिंग भी कर सकें। इससे उनकी एक नई पहचान बनेगी। हमारे किसान भाई तिलहन एवं दलहन के मामले में देश को आत्मनिर्भर बना सकते हैं। इससे हमारा विदेशी आयात तो खत्म होगा ही साथ ही हम इनका विश्वस्तर पर उत्पादन करके अपने पड़ोसियों का भी पेट भर सकेंगे।

प्रीति-ग्रामीण क्षेत्रों में युवाओं को रोजगार देने के लिए मुद्रा ऋण योजना किस प्रकार मदद कर सकती है?

श्री एम.जे. सक्सेना-यह एक महत्वपूर्ण एवं लाभकारी योजना है। इसका एक लाभ यह है ब्याज माफी और उसकी अवधि भी बढ़ा दी गई है। वैसे तो सरकार ने किसानों, मजदूरों व पढ़े लिखे लोगों के लिए बहुत सी घोषणाएं की हैं। वास्तव में आज दुनिया को एक नए नजरिए से देखने का समय आ गया है। नवयुवक-युवतियों को इन घोषणाओं से नाराज होने की जरूरत नहीं है। सरकार के दिए गए विकल्प अपनाकर वह आत्मनिर्भर हो सकते हैं। कोरोना ने एहसास करवाया है कि पौष्टिक आहार जरूरी है। किसानों द्वारा उत्पादित पौष्टिक अनाज और पशुपालकों द्वारा उत्पादित शुद्ध दूध, घी, दही, मक्खन आदि ने उनका गौरव बढ़ाया है। 135 करोड़ आबादी के लिए सभी जरूरत के सामानों की इस समय पर भी कमी न होना इसका श्रेय किसान भाइयों और कृषि वैज्ञानिकों को जाता है।

प्रीति-गांवों में एग्री क्लिनिक और पशु सहायक बन कर युवा किस प्रकार गांव में ही रहकर किसान भाइयों की मदद कर सकते हैं?

श्री एम.जे. सक्सेना-यूएनओ ने वर्ष 2020 को क्रॉप हैल्थ अंतर्राष्ट्रीय वर्ष घोषित किया है। हमारी मिट्टी स्वस्थ है, पौधा स्वस्थ है, अनाज स्वस्थ है, तो हम और हमारा पशु भी स्वस्थ है। इसके लिए गांव के नवयुवक एग्रीक्लिनिक शुरू करें, बहुत सारों ने तो शुरू भी कर दिए हैं। किसान विज्ञान केंद्र के अंतर्गत मृदा के स्वास्थ्य, पानी के स्वास्थ्य और पशु के स्वास्थ्य के बारे में बताते थे। दूषित पानी कौन सा है? स्वच्छ पानी कौन सा है? स्वस्थ पौधा कौन सा है? इसे बताना शुरू किया साथ ही यह भी बताना शुरू किया कि इसका प्रबंधन कैसे करें? यह एक अच्छी पहल है, जिससे नवयुवक व किसानों को प्रशिक्षण मिलेगा, ताकि वह अपने समूह के 15-20 किसानों को भी समझाएं कि कैसे स्वस्थ एवं शुद्ध उत्पाद से ज्यादा कमाई की जा सकती है।

प्रीति- गांव का युवा गांव में ही रहकर कृषि और पशुपालन पर आधारित व्यवसाय करें आप क्या सलाह देना चाहेंगे?

श्री एम.जे. सक्सेना-आज समय है नजरिया बदलने का। हमारे यहां सब उपलब्ध है। अब हमें उत्पादन के साथ-साथ उसकी मार्केटिंग भी करनी है। अच्छे उत्पाद को बढ़िया दाम पर बेचना है। इससे व्यवसाय व स्वरोजगार बढ़ेगा। मेरा अनुरोध है कि आप रोजगार ढूंढ़ने की जगह दूसरों को रोजगार देने के लिए नई शुरूआत करें। यदि आप पशुपालन में 5 दुधारू पशुओं से शुरूआत करें। वर्मी कम्पोस्ट बनाएं। बायोगैस लगाएं। हाइड्रोपोनिक्स चारा उगाने की मशीन लगाएं, तो निश्चित ही आपका दूध सर्वोत्तम होगा। दूध को वैसे भी दवा की संज्ञा दी गई है। दूध से आप घी, पनीर आदि बनाकर, आकर्षक पैकिंग करके अच्छे दाम पर बेचकर अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं। सरकार की योजनाओं का उद्देश्य सक्षम बनाना है, ताकि आप पैसे से पैसा बना सकें। उद्योगपति और कारोबारी भी इस काम में आपके साथ हैं। सभी पशुपालकों से निवेदन है कि कोरोना से रोकथाम हेतु सचेत रहें। साथ ही अपने आसपास के लोगों को भी जागरूक करें, ताकि हम कोरोना को हराकर आत्मनिर्भर बन सकें। □□

(श्री एम.जे. सक्सेना, मैनेजिंग ट्रस्टी आयुर्वेट रिसर्च फांउडेशन हैं)

ब्यांत के बाद दूध उत्पादन में कमी
कारण अनेक, समाधान एक

AYURVET™

पशुचिकित्सकों द्वारा
अपनाया गया वैज्ञानिक
रूप से जांचा परखा
भरोसेमंद हर्बल उपाय

रैस्टोबल

रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाये, तनाव से बचाए और कार्यक्षमता बढ़ाए

पशुओं की बेहतर रोग प्रतिरोधक क्षमता एवं उत्पादकता बढ़ाने के लिए शक्तिशाली समाधान

आयुर्वेट पशु स्वास्थ्य संसार

खोज खबर

4 करोड़ लीटर दूध का पाउडर बनाएगी महाराष्ट्र सरकार, दुग्ध उत्पादकों को मिलेगी राहत

देश में कोरोना लॉकडाउन के साथ डेरी किसानों, दुग्ध उत्पादकों और पशुपालकों के व्यवसाय और कमाई पर बहुत बुरा असर पड़ा है। डेरी का मार्केट पूरी तरह से टूट चुका है। अब इस स्थिति के बीच में दूध उत्पादकों को भारी घाटे से बचाने के लिए महाराष्ट्र सरकार ने बड़ा फैसला लिया है कि 127 करोड़ रुपये खर्च करके वह 4 करोड़ लीटर दूध का पाउडर बनाएगी। पूरे महाराष्ट्र में सरकारी अधिकारी पशुपालकों से दूध इकट्ठा करेंगे, जिसके बाद इसका पाउडर बनाने की प्रक्रिया शुरू होगी।

किसान की लागत घटे, उत्पादकता बढ़े और उपज के उचित दाम मिले : प्रधानमंत्री

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने चित्रकूट में बुंदेलखंड एक्सप्रेसवे का शिलान्यास और कृषक उत्पादन संगठन, एफपीओ का शुभारंभ करते हुए कहा, हम देश के अन्नदाता की चिंता करते हैं, उनकी बेहतरी के लिए सोचते हैं। हमारी सरकार ने न्यूनतम समर्थन मूल्य को डेढ़ गुना करने का फैसला हो, सॉयल हेल्थ कार्ड हो, यूरिया की 100 प्रतिशत नीम कोटिंग हो, दशकों से अधूरी सिंचाई परियोजनाओं को पूरा करना हो, हर स्तर पर काम किया है। किसानों की आय बढ़ाने की अहम यात्रा का, आज भी एक अहम पड़ाव है। यहां पर हमने देश के हर प्रांत के किसानों को क्रेडिट कार्ड दिया है। देश में किसानों से जुड़ी जो नीतियां थी, उन्हें हमारी सरकार ने निरंतर नई दिशा दी है। सरकार यह सुनिश्चित कर रही है कि किसान की लागत घटे, उत्पादकता बढ़े और उपज के उचित दाम मिले।

सरकार कर रही है डेरी किसानों के राहत पैकेज पर विचार डेरी राज्यमंत्री संजीव बालियान

कोरोना लॉकडाउन में डेरी किसानों और पशुपालकों की आर्थिक हालत बहुत खराब हो गई है। डेरी किसानों और किसान संगठनों की तरफ से केंद्र सरकार से डेरी सेक्टर के लिए आर्थिक पैकेज की मांग की जा रही है। अब केंद्रीय पशुपालन और डेरी राज्यमंत्री डॉक्टर संजीव बालियान ने कहा है कि सरकार डेरी किसानों की मदद के लिए उपाय करने पर विचार कर रही है। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार श्री बालियान ने कहा कि सहकारी क्षेत्र ने इस दौरान प्रशंसनीय कार्य किया है। इस दौर में सहकारी संस्थाओं ने अपनी क्षमता के मुकाबले 8 फीसद अधिक दूध का संकलन कर डेरी किसानों को राहत दी है।

इन 4 भारतीय नस्लों की गायों से मिलेगा 80 लीटर तक दूध, अकेले दुहना होगा नामुमकिन

भारत में लाखों की संख्या में लोग पशुपालन और डेरी फार्मिंग करते हैं। देश में दूध और उससे बने उत्पादों की मांग बढ़ती जा रही है। ऐसे में उन नस्लों की गायों की मांग अधिक हो गई है, जो ज्यादा मात्रा में दूध देती हैं। गुजरात की गिर गाय को सबसे ज्यादा दुधारू गाय के नाम से जाना जाता है। गिर गाय के थन बहुत बड़े होते हैं, इसलिए इसका दूध कम से कम 4 लोग मिलकर दुहते हैं। गिर गाय को ब्राजील और इजराइल में मुख्यतः पाला जाता हैं। इस गाय की खासियत है कि यह प्रतिदिन 50 से 80 लीटर तक दूध देती है। साहिवाल गाय के दुग्ध उत्पादन की बात करें, तो इससे सालाना 2000 से 3000 लीटर तक दूध प्राप्त होता है। यह एक बछड़े को जन्म देकर लगभग 10 महीने तक दूध दे सकती है। राठी गाय गंगानगर, बीकानेर, जैसलमेर और गुजरात में पाली जाती है। इससे रोजाना 6 से 8 लीटर तक दूध प्राप्त किया जा सकता है। कई पशुपालक इस गाय से रोजाना

15 लीटर तक दूध भी प्राप्त करते हैं। लाल सिंधी गाय सिंध इलाके में पाई जाती थी, इसलिए इसका नाम लाल सिंधी गाय पड़ गया। अब यह गाय पंजाब, हरियाणा, कर्नाटक, तमिलनाडु, केरल और ओडिशा में भी पाई जाती हैं। यह गाय भी 2000 से 3000 लीटर तक दूध सालाना दे सकती है।

पश्चिम बंगाल को छोड़ सभी राज्यों में पीएम किसान योजना लागू

प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना (पीएम-किसान) पश्चिम बंगाल को छोड़ देश के अन्य सभी राज्यों में लागू हो गई है। केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री कैलाश चौधरी ने लोकसभा में बताया कि पीएम किसान योजना देशभर में सफलापूर्वक लागू हो चुकी है। उन्होंने बताया कि पीएम किसान योजना के तहत 11 मार्च 2020 तक देशभर के 8,69,79,391 लाभार्थियों की पहचान की जा चुकी है, हालांकि पश्चिम बंगाल के करीब 69 लाख किसान इसमें शामिल नहीं है क्योंकि पश्चिम बंगाल सरकार ने अभी तक इस योजना में शामिल होने का फैसला नहीं किया है।

हरियाणा में एक लाख एकड़ में प्राकृतिक खेत का लक्ष्य निर्धारित : मुख्यमंत्री

हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के किसानों की आय वर्ष 2022 तक दोगुनी करने के लक्ष्य को हासिल करने के लिए सभी को एक साथ मिलकर प्राकृतिक खेती की और बढ़ना होगा। राज्य सरकार ने प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए एक लाख एकड़ में इसकी खेती का लक्ष्य निर्धारित किया है। गुरुकुल के प्राकृतिक खेती मॉडल को बढ़ावा देने को राज्य सरकार कमर कस रही है। राज्य में प्राकृतिक खेती का माहौल तैयार किया जा रहा है। इसके लिए सभी जिलों से

500-500 किसानों को ट्रेनर के रूप में ट्रेनिंग दी जाएगी। ये ट्रेनर आगे किसानों को प्राकृतिक खेती की जानकारी देंगे।

राज्य सरकार ने एक लाख एकड़ भूमि पर प्राकृतिक खेती का लक्ष्य निर्धारित किया है। इसे लेकर गुरुकुल में कृषि एवं किसान कल्याण विभाग की तरफ से पद्मश्री सुभाष पालेकर कृषि कार्यशाला का उद्घाटन किया गया। साथ ही वर्कशाप भी हुई जिसमें मुख्यमंत्री के अलावा कई मंत्री व विधायक भी शामिल हुए। इन सभी को प्राकृतिक खेती तकनीक से अवगत कराया गया।

कोरोना संकट में राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड ने दिए 'पशु आहार' के नए विकल्प

कोरोना महामारी से उपजे हालात में पशुओं की देखभाल और उनके लिए चारे का इंतजाम करना भी भारी हो गया है। लॉकडाउन के कारण एक तरफ किसानों के लिए चारा जुटाना मुश्किल हो गया है, वहीं दूसरी तरफ बाजार में मिलने वाले पशु आहार के दाम भी बेतहाशा बढ़ गए हैं। पशुओं के चारे के कच्चे माल जैसे मक्का और ग्वार की आपूर्ति में बाधा पहुंच रही है। ऐसे में राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड ने देश में कैटल फीड प्लांट्स में बदलाव की रणनीति पेश की है। इसका मकसद परंपरागत चारे की कमी से दूध की उत्पादकता कम न होने देना है। जाहिर है कि दूध उत्पादन का लक्ष्य हासिल करने के लिए डेरी के पशुओं की उत्पादकता बढ़ाने की जरूरत है। इसके लिए संतुलित पशु आहार की जरूरत होती है। कोविड महामारी के कारण हुए लॉकडाउन के कारण मवेशियों के चारे का उत्पादन प्रभावित हो रहा है। इसे देखते हुए एनडीडीबी के पोषण विशेषज्ञों ने न्यूनतम लागत फॉम्युलेशन (एलसीएफ) सॉफ्टवेयर का इस्तेमाल कर स्थानीय सामग्री का इस्तेमाल कर प्रमुख कच्चा माल का विकल्प तैयार किया है, जिनकी आपूर्ति बंदी के कारण बाधित है। उदाहरणतः ग्वार मील और मक्का इस समय उपलब्ध नहीं है। ऐसे में पशुओं के चारे में इसकी जगह कपास के बीज का अवशेष और मक्के का आटा इस्तेमाल करने का सुझाव दिया है, जो स्थानीय स्तर पर उपलब्ध है। प्रमुख कच्चा माल उपलब्ध न होने की वजह से पशुओं का चारा तैयार करने में आ रही दिक्कत को देखते हुए एनडीडीबी ने पशुओं का चारा तैयार करने वाले संयंत्रों के लिए नए फॉर्मूले पर काम करना शुरू किया, जिससे पशु चारे की मांग पूरी की जा सके।

आयुर्वेट डेस्क

कीटोसिस एवं नेगेटिव एनर्जी बैलेंस से छुटकारा पाएं

AYURVET™

कीटोरोक अपनाएं

कीटोरोक के फायदे

- लीवर की बेहतर सुरक्षा कर कीटोसिस से बचाव और इलाज में लाभदायक
- शरीर में सामान्य ग्लूकोज़ एवं ऊर्जा स्तर को बनाएं रखे
- दूध उत्पादन बढ़ाएं और अधिकतम उत्पादकता प्राप्त करने में मदद करे

कीटोरोक

कीटोसिस की रोकथाम एवं उपचार के लिए

उपचार के लिए:

200 मि.ली. प्रतिदिन दो बार *2* दिनों तक, अगले *2* दिन *100* मि.ली. दिन में एक बार

पशुपालन (जैविक प्रबंधन)

-आभा सक्सेना और डॉ. दीप्ति राय

पशुओं के जैविक प्रबंधन के लिए आवश्यक है कि पशु को उनके शारीरिक आवश्यकता एवं व्यावहारिक प्रवृति के अनुसार रखा जाए। इसके लिए उन्हें सामान्य रूप से रखना चाहिए। पशु प्रंबधन के सभी तरीके उनके अच्छे स्वास्थ्य तथा कल्याण के उद्देश्य से होने चाहिए।

दूसरे शब्दों में, पशुओं के जैविक प्रबंधन का मतलब है पशुपालन के ऐसे तरीकों का उपयोग करना, जिससे पशुओं के स्वास्थ्य का खास ध्यान, पूर्ण पोषण, पशुओं के तनाव में कमी आदि इस प्रकार किया जाए कि इनके लिए किसी दवाई, पेस्टीसाइड या हार्मोन का उपयोग नहीं किया गया हो। पशु समूह की अच्छे सेहत के लिए सही भोजन, चारागाहों का सही इस्तेमाल तथा रहने के लिए पर्याप्त स्थान आदि आवश्यक हैं।

जैविक पशुपालन में निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना जरूरी है, चाहे पशुपालन दूध या इससे उत्पादित पदार्थों के लिए हो या किसी और उद्देश्य के लिए। पशुपालन से उत्पादित पदार्थ तभी हम जैविक मान सकते हैं जबकि पशु पिछले तीन ब्यांत (गर्भधारण) से नियमित देखभाल में रखा गया हो।

1. आरंभ के नौ महीने का चारा कम से कम 80 प्रतिशत जैविक होना चाहिए या ऐसी जमीन से लिया गया हो जो कि जैविक प्रबंधन के अधीन हो तथा चारे का उत्पाद जैव फसल आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर किया गया हो और बाद के तीन महीने का चारा पशुपालन मानक के तहत हो।

2. किसी पशु समूह को जैविक उत्पाद के अंतर्गत आने के लिए सभी पशुओं को पिछले तीन गर्भधारण से जैव प्रबंधन के अधीन होना चाहिए।

3. बछड़े को शुरू के चार हफ्तों में खीस सहित पूर्ण रूप से दुग्ध आहार के ऊपर रखा जाना चाहिए।

प्रजनक पशु

प्रजनन के लिए ऐसे पशु को भी लिया जा सकता है जोकि सामान्य पद्धति से हों, परंतु उससे उत्पादित शिशु को पूर्ण रूप से जैविक प्रबंधन में रखा जाए।

निषेध

1. पशु या उससे उत्पादित कोई भी वस्तु जो कि जैविक रूप से तैयार करने की प्रक्रिया से हटकर सामान्य रूप से तैयार किया गया हो, को एक साथ न बेचा जाए।

2. जैविक प्रबंधन में अगर कोई पशु पिछले तीन ब्यांत से न हो तो उसे जैविक बता कर ना बेचा जाए।

पशुपालन के अंतर्गत सभी पशुओं की पहचान रखना चाहिए, जैव पशुपालन के अंतर्गत सभी पशुओं की पहचान खासतौर पर रखी जाए तथा उनसे प्राप्त खाद्य एवं अखाद्य सामग्री का एक रिकार्ड बनाएं ताकि भविष्य में उसे कोई परेशानी न हो।

पशु आहार

पशु के लिए उसका सारा खाद्य पदार्थ, जैसे कि हरा चारा, भूसा इत्यादि पूर्ण रूप से जैविक प्रबंधन के अधीन खेत से तैयार किया जाना चाहिए और अगर हो सके तो इसे जैविक तरीके से दिया जाना चाहिए। कुछ अपवादों को छोड़ कर जो कि निषिद्ध न हो उनको भी पशु आहार में दिया जा सकता है।

जैविक पशुपालक

1. पशु दवाएं जो कि उसकी किसी भी प्रकार की वृद्धि करे, जैसे कि हॉरमोन्स, न दिया जाए।

2. पशु की एक निर्धारित आयु पर उसके आहार में ज्यादा मात्रा में पोषक तत्व न मिलाया जाए।

3. आहार में यूरिया या खाद तथा प्लास्टिक पिलेट ना मिलाया जाए।

4. ऐसे खाद्य सामग्री जो स्तनधारी या मुर्गियों को हलाल करने के पश्चात उनके सह उत्पादों से बनाया गया हो।

पशु के स्वास्थ्य संबंधी मानक तरीके

क. पशु के स्वास्थ्य से संबंधित निम्नलिखित रोकथाम के तरीकों का इस्तेमाल किया जाना चाहिए:

1. ऐसा पशु चुनना चाहिए जो कि एक खास प्राकृतिक वातावरण के अनुकूल हो उसमें बीमारियों से लड़ने की क्षमता भी हो।

2. खाद्य पदार्थ ऐसा होना चाहिए जो कि पूर्ण रूप से पोषक हो तथा उसमें विटामिन, मिनरल, प्रोटीन, वसा, ऊर्जा के स्रोत तथा रेखा आदि पर्याप्त मात्रा में हो।

3. पशु का एक स्वच्छ घर, उसके खाने के प्रयुक्त आहार और पशु व उसके आसपास साफ सफाई होनी चाहिए ताकि कम से कम बीमारी फैले।

4. पशु को आजादी से घूमने का प्रबंध होना चाहिए ताकि उसे कम से कम तनाव हो।

5. वैक्सीन तथा अन्य जैव पशु दवाओं का प्रयोग समय समय पर होना चाहिए।

ख. अगर उपर्युक्त उपायों से पशुओं की बीमारी की रोकथाम नहीं की जा सके तब ऐसी दवाओं का प्रयोग करें जोकि निषिद्ध ना हो।

ग. पशुओं के जैविक प्रबंधन के लिए ऐसा न किया जाए

1. ऐसा पदार्थ या पशु जो कि किसी ऐसी एंटीबायोटिक से उपचारित हो, जो निषिद्ध हो उसे यह कह कर न बेचा या पेश किया जाए कि यह जैविक है।

2. वैक्सीन के अतिरिक्त, बीमारी के अभाव में किसी दवाई का प्रयोग न करें।

3. किसी भी प्रकार की वृद्धिके लिए हॉरमोन न दें

4. कृत्रिम परजीवीनाशक को रोजमर्रा में न दें।

5. समय समय पर निषिद्ध की गई दवाओं को न दें।

6. किसी ऐसी परिस्थिति में जब जैव प्रबंधन के द्वारा पशु का इलाज संभव न हो, उसका इलाज आवश्यकतानुसार किया जाए। परंतु इस प्रकार के पशु को अलग चिन्हित कर लें तथा इसे प्राप्त उत्पाद को जैविक कहकर न बेचा जाए।

पशुओं के रहने की परिस्थिति

क. पशुपालन के जैविक प्रबंधन के लिए निम्नलिखित उद्देश्यों का ध्यान रखना चाहिए:

1. पशु के लिए ताजी हवा, छाया, उसके रहने की जगह, प्राकृतिक वातावरण, उसके बढ़ने की उम्र तथा प्रजाति के अनुकूल होना चाहिए।

2. जुगाली करने वाले पशुओं के लिए चारागाह की उचित व्यवस्था।

3. पशु को बैठने व सोने के लिए साफ व सूखी जमीन।

4. पशु के रहने का घर इस प्रकार से हो कि उसमें घूमने की जगह, सूर्य का प्रकाश, वायु के संचार के लिए अच्छी व्यवस्था होनी चाहिए।

5. पशु को कम से कम बीमारी या चोट लगे।

ख. जैव प्रबंधन में पशुओं को निम्नलिखित अस्थाई परिस्थितियों में रखा जा सकता है जैसे:

1. वातावरण में बदलाव।

2. दुग्ध उत्पादन की अवस्था।

3. ऐसी परिस्थिति जिसमें पशु के स्वास्थ्य या सुरक्षा पर विपरीत प्रभाव पड़े।

4. पानी व मृदा की गुणवत्ता पर असर का खतरा।

ग. जैविक पशुपालन के अंतर्गत पशुओं के मल मूत्र का निष्काषण इस प्रकार से किया जाए कि उससे मिट्टी, पानी, फसल आदि दूषित न हो। साथ ही यह भी ध्यान रखा जाए कि पोषक पदार्थों का चक्रीकरण हो। □□

बछड़ों के दस्त (काफ़ स्कौर) में मौखिक इलेक्ट्रोलाइट पुनर्जलीकरण घोल की भूमिका

-मनु जायसवाल

बछड़ा पालन एक लाभदायक डेरी फार्म पशुधन उद्योग की कुंजी है, जो उत्पादन को बनाए रखने के लिए डेरी फार्म का एक महत्वपूर्ण घटक है। बछड़ा पालन, उनकी जीवितता और स्वास्थ्य सुनिश्चित करने के लिए प्रमुख प्रबंधन उद्देश्य है। बछड़ों में दस्त होना दुनिया भर में डेरी उद्योग के सबसे विनाशकारी रोगों में से एक है। डेरी में 75 प्रतिशत प्रारंभिक बछड़े की मृत्यु, पूर्व-प्रजनन काल में तीव्र दस्त से होती है, जो दुनिया भर में पशु उद्योग में उत्पादकता और आर्थिक नुकसान का प्रमुख कारण है।

बछड़ा पालन एक लाभदायक डेरी फार्म पशुधन उद्योग की कुंजी है, जो उत्पादन को बनाए रखने के लिए डेरी फार्म का एक महत्वपूर्ण घटक है। बछड़ा पालन, उनकी जीवितता और स्वास्थ्य सुनिश्चित करने के लिए प्रमुख प्रबंधन उद्देश्य है। बछड़ों में दस्त होना दुनिया भर में डेरी उद्योग के सबसे विनाशकारी रोगों में से एक है। डेरी में 75 प्रतिशत प्रारंभिक बछड़े की मृत्यु, पूर्व-प्रजनन काल में तीव्र दस्त से होती है, जो दुनिया भर में पशु उद्योग में उत्पादकता और आर्थिक नुकसान का प्रमुख कारण है।

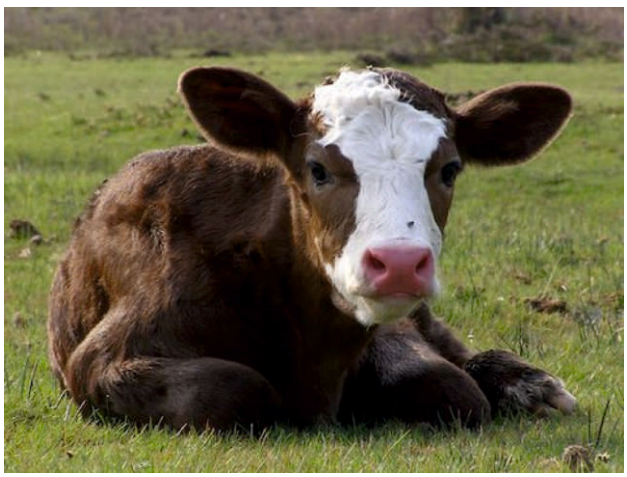

डायरिया को एक बढ़ी हुई आवृत्ति, तरलता या मल उत्सर्जन की मात्रा के रूप में परिभाषित किया गया है। डायरिया में, क्लिनीको-बायोकेमिकल परिवर्तन प्रकृति में जटिल होते हैं, जो तरल पदार्थ, इलेक्ट्रोलाइट और अकीड़ोसिस के स्तर को असंतुलन करते हे, जोकि इसकी विशेषता होती है।

बछड़ों में दस्त होना एक बहु गुटीय रोग इकाई है, जिससे डेरी में गंभीर वित्तीय और पशु कल्याण निहितार्थ हो सकता है, क्योंकि 3 महीने की उम्र तक बछड़ों में सबसे आम बीमारी में से एक हे।

वर्गीकरण

मुख्यता काफ़ स्कौर के ज्ञात कारणों को दो श्रेणियों में बांटा गया है :-

1. गैर-संक्रामक

(ए) गर्भवती पशु के अपर्याप्त पोषण, विशेष रूप से गर्भ के अंतिम तीन माह के दौरान गर्भवती पशु में ऊर्जा और प्रोटीन की कमी, कोलोस्ट्रम की गुणवत्ता और मात्रा दोनों को प्रतिकूल रूप से प्रभावित होती है। विटामिन ए और ई में कमी बछड़े में अधिक दस्त होने की घटनाओं से जुड़ी हुई है।

(इ) नवजात बछड़े के लिए अपर्याप्त वातावरण जैसे सर्दी, तूफान, भारी बर्फ या वर्षा आदि नवजात बछड़े के लिए तनावपूर्ण हैं और संक्रामक एजेंटों को फैलने का मौका देते हैं।

(ब) नवजात बछड़े को अपर्याप्त ध्यान देना, विशेष रूप से कठिन जन्म या प्रतिकूल मौसम की स्थिति के दौरान। बछड़े के जन्म के समय, उसके शरीर में कोई भी एंटीबॉडी नही होती है। बछड़ा जीवन के शुरुआती समय में ही नर्सिंग कोलोस्ट्रम द्वारा इन एंटीबॉडी को प्राप्त करता हे। जैसे-जैसे बछड़ा बड़ा होता जाता है, यह घंटे के हिसाब से कोलोस्ट्राल एंटीबॉडी को

सोखने की क्षमता खो देता है। बछड़े को दिया गया कोलोस्ट्रम, जो 24-36 घंटे पुराना है, व्यावहारिक रूप से बेकार है।

2. संक्रमण

बैक्टीरियल	ई-कोलाइ
	साल्मोनेला
	क्लोस्ट्रीडियम और अन्य बैक्टीरिया
वायरल	रोटा वायरस
	कोरोना वायरस
	बीवीडी वायरस
	आइबीआर वायरस
प्रोटोजोआ	क्रिप्टोस्पोरिडियम
	कोसिडिया
	फंगस

तीव्र दस्त से ग्रसित बछड़ों में तेजी से शरीर का पानी व्यय होता है, जिसके परिणाम स्वरूप तेजी से निर्जलीकरण, इलेक्ट्रोलाइट नुकसान और एसिडोसिस देखा गया हे। हालांकि संक्रामक एजेंट केवल आंतों को प्रारंभिक नुकसान पहुँचाते हैं, जबकि मृत्यु आमतौर पर निर्जलीकरण, एसिडोसिस और इलेक्ट्रोलाइट्स के नुकसान से होती है।

रोगाणुरोधी के साथ प्रभावित बछड़ों का उपचार मृत्यु दर को रोकने के लिए पर्याप्त नहीं है, क्योंकि ये संक्रामक एजेंटों को नष्ट करते हैं, लेकिन निर्जलीकरण के सुधार पर उनके प्रभाव को समाप्त करने में मदद नहीं कर सकते हैं। इसलिए, निर्जलीकरण (इलेक्ट्रोलाइट) और एसिड बेस की स्थिति में सुधार के लिए मौखिक तरल चिकित्सा को देखना आवश्यक है, ताकि निर्जलीकरण को ठीक किया जा सके।

मौखिक इलेक्ट्रोलाइट चिकित्सा का उद्देश्य सोडियम अवशोषण की सुविधा के लिए ग्लूकोज और ग्लाइसिन के साथ पानी और नमक प्रदान करके निर्जलीकरण को सही करना है। निर्जलित बछड़ों को मौखिक पुनर्जलीकरण करना आर्थिक रूप से सबसे अच्छा समाधान है।

तरल पदार्थ और इलेक्ट्रोलाइट्स के प्रतिस्थापन का लक्ष्य वर्तमान असंतुलन, रक्त की मात्रा की बहाली, अंतःशिरा प्रशासन के माध्यम से पशुओं में सदमे के उपचार या इलेक्ट्रोलाइट समाधान के मौखिक प्रशासन के सुधार हैं।

बछड़े में अति तीव्र दस्त

बछड़ों के दस्त के मामले मे उपचार में पहला और सबसे महत्वपूर्ण कदम

- हमेशा पहले निर्जलीकरण का इलाज करें

क) बछड़ों के पास हमेशा पानी होना चाहिए। यदि एक बछड़ा खड़ा है और उसके पास एक अच्छा सकलिंग रीफ्लैक्स है, तो मौखिक पुनर्जलीकरण इलेक्ट्रोलाइट्स घोल को देना चाहिए तथा मौखिक पुनर्जलीकरण इलेक्ट्रोलाइट्स को आवश्यकतानुसार दिन में एक से तीन बार दिया जाना चाहिए।

ख) यदि एक बछड़ा खड़ा नहीं हो सकता है और गंभीर रूप से निर्जलित है, तो अंतःशिरा तरल पदार्थ (इंट्रा वीनस फ्लुइड) की आवश्यकता होती है, जो कि एक पशु चिकित्सक द्वारा प्रशासित किया जाना चाहिए।

2. यदि कोई बछड़ा प्रणालीगत संक्रमण या सेप्टीसीमिया के लिए किसी भी नैदानिक संकेत को प्रस्तुतकर्ता है, तो बैक्टीरिया को रोकने या आंत में ई कोलाई के अतिवृद्धि का इलाज करने के लिए एंटीबायोटिक दवाओं का उपयोग करना चाहिए।

3. बुखार वाले पशुओं को एक ऐन्टी इन्फ़्लामेटरी (जैसे कि फ्लुनिक्सिन मेगलुमिन या मेलोक्सीकेम) के साथ भी इलाज किया जा सकता है। यह भूख को बढ़ाने और सकलिंग रीफ्लैक्स को ठीक करने में मदद कर करता है

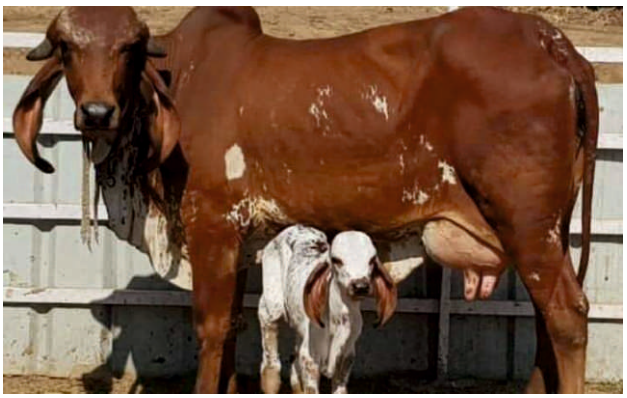

उपचार सफलता को कैसे मापें

हालांकि फीकल स्कोरिंग का उपयोग करके डायरिया का मूल्यांकन किया जा सकता है, फीकल संगति में सुधार होना बछड़ों को हाइड्रेटेड, पानी और इलेक्ट्रोलाइट्स के दैनिक नुकसान को सही ढंग से नहीं दर्शाता है, यह इसके लिए विश्वसनीय मानक नहीं हे। फेकल वॉल्यूम यह नहीं दर्शाता है, कि बछड़े की छोटी आंत मे वर्तमान की क्या स्थिति है। एसिडोसिस और पुनर्जलीकरण के सुधार को देखने के लिए अन्य नैदानिक संकेतों पर ध्यान देना चाहिए। जैसेकि आंखों

की स्थिति या त्वचा के खिचाव के माध्यम से निर्जलीकरण का आंकलन करना अच्छे तरीके हैं।

गंभीर मामलों के लिए, पुनर्जलीकरण चिकित्सा के साथ साथ बछड़ों के स्थायी और सकलिंग रीफ्लैक्स मे सुधार होमा यह निर्धारित करने में मदद करेगा कि क्या एंटीबायोटिक दवाओं के साथ उपचार काम कर रहा है या यदि वे आवश्यक हैं। इसके अलावा, बछड़े के तापमान की निगरानी करने से, यह संकेत प्राप्त होता है कि क्या जीवाणुनाशक और एन्टी इंफ्लेमेटरी के साथ उपचार की आवश्यकता है या उसे बढ़ाया जाए ।

यदि दो से तीन दिनों के भीतर कोई सुधार नहीं होता है तथा नैदानिक संकेत गंभीरता में वृद्धि करते हैं, तो पशु चिकित्सक से पशु की जांच अवश्य करवाए।

निवारण

डायरिया में प्रारंभिक उद्देश्य यह है कि कम से कम 24 घंटे के लिए न दिया जाए। डिएटरी मोडिफायर मुख्य रूप से दस्त के प्रबंधन में उपयोग किया जाता है। काओलेन और पैक्टिन का व्यापक रूप से बैक्टीरिया को नियंत्रित करने के लिए किया जाता है। परजीवी उत्पत्ति के कारण डायरिया का उचित एंटीहेल्मिन्थिक्स के साथ इलाज किया जाना चाहिए।

बछड़ों में दस्त को रोकने के लिए स्वच्छता और आवास के प्रावधान पर ध्यान देने की आवश्यकता है। एक अध्ययन में पाया गया कि, अगर बछड़ों को बंद कमरों की अपेक्षा, एक खुले झुंड में रखा जाए तो, उनके दस्तों से साल्मोनेला नामक बैक्टीरिया तीन गुना अधिक मात्रा में निकालने की संभावना होती है।

नवजात बछड़ों को अच्छी गुणवत्ता के कोलोस्ट्रम की उचित मात्रा (3 से 4 लीटर) जन्म के बाद जितनी जल्दी हो सके (4 घंटे के भीतर) पिलाना चाहिए। यह प्रक्रिया गाय के कोलोस्ट्रम से एंटीबॉडी अवशोषण में सुधार करता है और एक मजबूत प्रतिरक्षा प्रणाली को सुरक्षित करता है।

□□

पशु औषधि विभाग, कॉलेज ऑफ वेटेरनरी एंड एनिमल साइन्स, सरदार वल्लभ भाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, मेरठ

आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार के सजिल्द अंक उपलब्ध

हमारे बहुत से पाठक आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार के अंकों को संजोकर रखते हैं, लेकिन कई बार उनसे वह अंक छूट जाते हैं। इसके अलावा, बहुत से ऐसे लोग हैं, जो आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार के वर्ष 2017 के 12 अंक प्राप्त करना चाहते हैं। उनके लिए खुशखबरी यह है कि इस वर्ष यानि वर्ष 2017 के सभी अंक बाइंड कर सजिल्द उपलब्ध करवाएं जा रहे हैं। इसके अलावा, वर्ष 2016 के सजिल्द अंकों की भी कुछ प्रतियां उपलब्ध हैं। चूंकि इसकी प्रतियां सीमित हैं अत: आपसे अनुरोध है कि अपनी प्रति जल्द से जल्द बुक करवाएं। एक सजिल्द प्रति की कीमत 400/- रुपए (डाक खर्च अलग) है। राशि ड्राफ्ट अथवा मनीआर्डर द्वारा आयुर्वेट लिमिटेड, दिल्ली के नाम भिजवाएं।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:-

दूरभाष: 91-120-7100201

पशुओं में गर्भावस्था-उपयोगी जानकारियाँ

-दीपिका डी. सीज़र, ज्योत्सना शक्करपुड़े, सुमन संत,
मधु शिवहरे, शशि प्रधान, राजेश वांद्रे, सोमेश मेश्राम

प्रजनन सम्बन्धी अवस्था, एक मादा के गर्भाशय में भ्रूण के होने को गर्भावस्था (गर्भ+अवस्था) कहते हैं, तदुपरांत मादा बच्चे को जन्म देती है। आमतौर पर यह अवस्था गाय में 9 माह 9 दिन तक रहती है। कभी-कभी संयोग से एकाधिक गर्भावस्था भी अस्तित्व में आ जाती है, जिससे जुड़वा एक से अधिक बछड़ों कि उपस्थिति होती है।

लक्षण

- एक स्वस्थ गाय 21 दिनों में एक बार गर्मी में आती है। गर्भ ठहरने के बाद गाय का गर्मी में आना बंद हो जाता है।
- एकांत हो जाती है एवं शांत वातावरण चाहिए होता है।
- दुग्ध उत्पादन कम होने लगता है।
- गर्भावस्था काल भिन्न भिन्न प्रजातियों में गर्भावस्था काल भिन्न होता है जैसे गाय का 280 दिन और भैंस का 320 दिन।

गर्भावस्था का प्रबंधन

इस काल के अंतिम चरण में पशु को ज्यादा दाना देना चाहिए। गाभिन पशु को घर के आस पास ही निगरानी में रखना चाहिए एवं दिन में दो और अधिक बार ब्याने के लक्षणों को देखना चाहिए। इस समय पशु को साफ़ सुथरे एवं हवादार जगह पर रेत और मिट्टी पर बिछौना तैयार करके रखना चाहिए। गाभिन पशु को पूरे समय बांधकर या कम जगह पर नहीं रखना है, चूंकि पशु इस समय काफी व्याकुल रहता है इस कारण से उसे घूमने के लिए आँगन में खुला छोड़ देना चाहिए।

ब्यांत

यह एक प्राकृतिक प्रक्रिया है जो आम तौर पर मदद के बिना होती है। गाय को कठिनाइयाँ होने की स्थिति में घनिष्ठ अवलोकन की आवश्यकता होती है। बछिया को बड़ी गायों की तुलना में अधिक समस्या होती है।

लक्षण

- पेट के दाहिने किनारे के आकार में वृद्धि देखने के लिए मिलती है।
- थन भर जाते हैं एवं कड़े हो जाते हैं।
- श्लेष्म और रक्त की उपस्थिति के साथ योनि लाल हो जाती है और सूजन हो जाती है।
- पशु बेचैन दिखाई देगा।
- पानी की थैली योनि में दिखाई देगी।

नार्मल ब्यांत

ब्यांत के दौरान आने वाली समस्या

बच्चा अगर उपरोक्त दर्शाये चित्र के तरीके से नही है, तो उसके बाहर आने में दिक्कत होने की अवस्था में डॉक्टर से सहायता लेनी अति आवश्यक हो जाती है। अगर सहायता नही ली गयी तो हो सकता है की गाय या फिर बछड़े की जान भी जा सकती है और इसका असर उसके दूध उत्पादन पर भी देखने को मिलता है।

ब्याने पश्चात् देखभाल

जेर स्वाभाविक रूप से गिर जाती है, लेकिन अगर ऐसा 8 से 12 घंटे के भीतर न हुआ तो ऐसी स्थिति में पशुचिकित्सक से मदद लेना अति आवश्यक है। यदि सहायता नही ली गई तो इसके परिणाम स्वरुप बच्चेदानी में इन्फेक्शन हो जायेगा अतएव बच्चा दानी ख़राब भी हो सकती है। □□

-पशुचिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय जबलपुर,
नानाजी देशमुख पशुचिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)

जैव विविधता दिवस पर विशेष

गर्मियों में पशु स्वास्थ्य प्रबंधन व कोरोना वायरस से बचाव

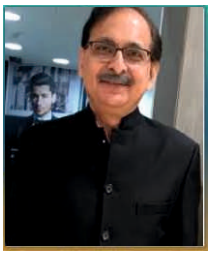

पशुपालकों जैसाकि आप जानते ही हैं कि गर्मी का मौसम आ गया है। ऐसे में पशुओं को गर्मी से बचाकर हम पशु को स्वस्थ रखकर उत्पादन को बढ़ा सकते हैं। हाल ही में इसी संबंध में रेडियो पर एक महत्वपूर्ण परिचर्चा "गर्मी के मौसम में पशु स्वास्थ्य प्रबंधन और कोरोना वायरस से बचाव" में डॉ. अनूप कालरा (संपादक, आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार पत्रिका) ने भाग लिया। वार्ता के प्रमुख अंश आपके सम्मुख प्रस्तुत हैं, ताकि आप भी इनसे लाभ उठा सकें।

सुजाता-कोरोना वायरस से बचने के लिए किसान भाइयों को क्या करना चाहिए?

डॉ. अनूप कालरा-इससे बचाव के लिए तीन बातों का ध्यान रखें। पहले सोशल डिस्टेंसिंग, दूसरा मास्क लगाएं और तीसरा जब घर से बाहर जाकर आएं, तो वापस आने पर हाथों को अच्छे से साबुन से धोएं।

सुजाता-जैव विविधता के संरक्षण के लिए आप किसान भाइयों को क्या सलाह देंगे?

डॉ. अनूप कालरा-जैव विविधता यानि बायोडायवर्सिटी बहुत महत्वपूर्ण है। कुछ लोग इसे सस्टेनेबिलिटी का नाम भी देते हैं। यह पर्यावरण संरक्षण व पशु-पक्षियों के साथ रहना है। कोरोना से पहले बहुत अधिक प्रदूषण से जो पशु-पक्षी दिखने बंद हो गए थे, वो आज नजर आने लगे हैं। मधुमक्खियों के छत्ते दिखने लगे हैं। जैव विविधता प्रणाली पर हमारे पशुपालकों को विशेष ध्यान देना चाहिए। कृषि के साथ-साथ पशुपालन, मछलीपालन आदि भी करें। सही अर्थों में यही बायोडायवर्सिटी है।

सुजाता-गर्मी में पशु तनाव महसूस कर रहे हैं। ऐसे में आप उससे बचाव के लिए पशुपालकों को क्या सलाह देंगे?

डॉ. अनूप कालरा-यहां दो चीजें हैं। एक तो हम बात कर रहे हैं पशुस्वास्थ्य की। और आज कोरोना में यही चीज मनुष्यों के लिए भी लागू हो रही है। प्रधानमंत्री और आयुष मंत्रालय ने कहा है कि तनाव कम करने के लिए पशु व मनुष्य दोनों जड़ी बूटियों जैसे अश्वगंधा, कालमेघ व गिलोय आदि का इस्तेमाल करें। हम किसान भाइयों के साथ मिलकर इन औषधियों की खेती भी करवा रहे हैं। हमारा मानना है कि किसान भाई अपनी परंपरागत खेती गेहूं व चावल आदि के साथ-साथ अपने एक चौथाई खेतों में इन जड़ी बूटियों की खेती करें। हम इसमें किसानों की मदद करेंगे। इससे उनकी आय बढ़ाएंगी। हमारा संस्थान इन औषधियों के उत्पाद तैयार करके पशु स्वास्थ्य, उनमें तनाव कम करने व उत्पादन बढ़ाने में किसानों को मदद करता है।

सुजाता-गर्मी के मौसम में पशुओं में हरे चारे व पानी की व्यवस्था किस प्रकार करवानी चाहिए?

डॉ. अनूप कालरा-हमारे पशुपालकों को पशुओं के लिए सुबह-शाम स्वच्छ व शीतल जल की व्यवस्था करनी चाहिए। इससे उनका उत्पादन दस प्रतिशत तक बढ़ सकता है। गर्मी में हरा चारा मिलना मुश्किल होता है। ऐसे में हमारे संस्थान ने

आयुर्वेट प्रोग्रीन हाइड्रोपोनिक्स मशीन बनाई है, जिसको अनेक पशुपालकों एवं गौशालाओं ने अपनाया है। इसमें बहुत कम जगह व पानी में बिना मिट्टी के बहुत कम लेबर से 50-500 कि.ग्रा. प्रतिदिन पौष्टिक हरा चारा उगाया जा सकता है।

सुजाता-हाइड्रोपोनिक्स तकनीक के बारे में विस्तार से जानकारी कहाँ से मिल सकती है?

डॉ. अनूप कालरा-आयुर्वेट रिसर्च फाउंडेशन (चिडाना, सोनीपत, हरियाणा) में हमारे सेंटर पर आकर आप जानकारी ले सकते हैं। इसके अलावा, हमारी टीम सदस्य के मोबाइल नंबर 9560193172 पर जानकारी ले सकते हैं।

सुजाता-थनैला रोग क्या है? इससे दुग्ध उत्पादन पर क्या असर पड़ता है? इससे पशुओं को कैसे बचा सकते हैं?

डॉ. अनूप कालरा-देखिए, फिर से कोरोना से जुड़ी चीज हमारे सामने आ गई है। जैसाकि पशुपालक जानते ही हैं कि पशु के थन में सूजन आने व पशु के बीमार पड़ने से वह दूध देना बंद या कम कर देता है। एक बार थनैला होने पर थन खराब होने की बहुत अधिक संभावना रहती है। यद्यपि किसान भाई अपने तरीके से पूरी कोशिश करते हैं कि थनैला न हो फिर भी कुछ सावधानियां हैं, जिससे थनैला रोग से बचा जा सकता है। जैसेकि हाथ एवं थनों को स्वच्छ रखें। दूध निकालने और निकालने के बाद थन साफ करें। पशु के बैठने की जगह साफ हो। दूध दुहने के बाद उसे हरा चारा या कुछ ऐसा दें ताकि पशु कम से कम 15-30 मिनट तक न बैठे। चूंकि इस समय पशु के थन की नली खुली होती है। इससे कीटाणु आसानी से थन में प्रवेश कर जाते हैं और थनैला की संभावना बढ़ जाती है। दूसरा जड़ी बूटियों जैसे अश्वगंधा, आंवला व आम की छाल का उपयोग करके थन की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ा सकते हैं। किसान भाई हमारे साथ मिलकर इनकी खेती करते हैं और इन्हीं से हम अपने उत्पाद तैयार करके किसान भाइयों तक पहुंचाते हैं। थनैला के लिए बहुत ही उपयोगी एक जैल मलहम मैस्टीलेप का हमारे पशुपालकों द्वारा उपयोग किया जा रहा है और इसके बहुत ही अच्छे परिणाम भी उन्हें मिल रहे हैं।

सुजाता-आपकी कंपनी समय-समय पर किसानों की सेवा का काम करती रही है। कोविड-19 के समय आपकी कंपनी द्वारा क्या सेवा कार्य किया जा रहा है?

डॉ. अनूप कालरा-हमारा संस्थान पिछले 25 वर्षों से किसानों से जुड़कर हरियाणा, उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड में उनकी मदद कर रहा है। नाबार्ड ने भी हमारे कार्यों को सराहा है और हम उनके साथ मिलकर भी काम कर रहे हैं। हम किसानों को स्वावलंबी बनाने का प्रशिक्षण देते हैं। कोरोना संकट में जरूरतमंद मजदूरों व किसानों को संस्थान ने चावल, दाल, आटा आदि के पैकेट बांटे हैं। हमारी सोच यही रही है कि किसान आगे बढ़ेगा, तभी संस्थान भी बढ़ेगा। देश के लिए जवान के साथ-साथ किसान भी बहुत जरूरी है। इसीलिए हमारे

संस्थान ने पीएम केयर फंड में एक करोड़ रुपए का योगदान भी दिया है। हमारे चेयरमैन का मानना है कि यह पैसा निश्चित से कहीं-न-कहीं किसानों तक पहुंचेगा।

सुजाता-डॉक्टर साहब, अभी इसमें जवान, किसान के साथ-साथ विज्ञान को भी जोड़ दिया गया है?

डॉ. अनूप कालरा-हाल ही में प्रधानमंत्री जी ने भी मन की बात कार्यक्रम में कहा था कि हमें हमारी आयुर्वेदिक धरोहर पर काम करने की जरूरत है। हमारा संस्थान 25 वर्षों से इसी सोच पर काम करते हुए परंपरागत ज्ञान एवं आधुनिक अनुसंधान को आधार बनाकर काम करता रहा है। हम अपने ऋषि मुनियों से मिले ज्ञान को विज्ञान से जोड़कर पशु स्वास्थ्य में ऐसे-ऐसे समाधान ला रहे हैं, जिससे पशु स्वास्थ्य बेहतर बनाकर अधिक उत्पादन प्राप्त किया जा रहा है। इससे किसानों को भी मुनाफा हो रहा है और वह प्रधानमंत्री जी की सोच किसानों की आय दुगुनी करने को साकार करने में योगदान दे रहे हैं।

सुजाता-बछड़े-बछियों को गर्मी से बचाव हेतु क्या देखभाल जरूरी है?

डॉ. अनूप कालरा-आज की बछड़ी ही कल की गाय है। हम आज बछिया की अच्छी देखभाल, खान-पान, स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं देंगे तो वो एक अच्छी गाय नहीं बनेगी। दुग्ध उत्पादन कम होगा। इसके लिए कुछ बातों का विशेष ध्यान रखें। पशु को कीड़े की दवा दें (डी-वार्मिंग)। उसके पोषण पर विशेष ध्यान दें क्योंकि एक बछिया की वृद्धि 400-500 ग्राम प्रतिदिन होनी चाहिए। बछिया के रख-रखाव पर खास ध्यान दें, क्योंकि 11-14 महीने में गाय (वयस्क पशु) होकर गाभिन होगी तभी पशुपालक को लाभ हो सकता है।

□□

सदस्य बनें

आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार

एक अच्छी आदत पड़ जाए
जो ज्ञान का दीप जलाएं

आयुर्वेट पशुस्वास्थ्य संसार

आयुर्वेट लिमिटेड, 101-103, प्रथम तल, केएम ट्रेड टॉवर, प्लांट नं. एच-3, सैक्टर-14, कौशाम्बी-201010 (उ.प्र.). दूरभाष: 91-120-7100201

कृपया स्पष्ट लिखें/टाइप करें:

☐ स्वयं के लिए ☐ मित्र को भेंट ☐ संस्थागत

नाम:.....संस्थान.....

पता:☐ कार्यालय ☐ घर.....

.....

पिन.....

दूरभाष:☐ कार्यालय ☐ घर.....

मैं राशि.....नकद/मनीआर्डर/डिमांड ड्राफ्ट/चैक क्रमांक.....(दिल्ली से बाहर के लिए 15 रुपए अतिरिक्त जोड़कर दें) दिनांक..... ''आयुर्वेट लिमिटेड, दिल्ली'' के नाम प्रेषित कर रहा हूं। कृपया पत्रिका प्रेषित करें।

मूल्य : 25/- रुपए प्रति अंक
वार्षिक सदस्यता शुल्क : 275/- रुपए

विश्व पर्यावरण दिवस (5 जून)

विश्व पर्यावरण दिवस संयुक्त राष्ट्र द्वारा प्रकृति को समर्पित दुनियाभर में मनाया जाने वाला सबसे बड़ा उत्सव है। पर्यावरण और जीवन का अटूट संबंध है फिर भी हमें अलग से यह दिवस मनाकर पर्यावरण के संरक्षण, संवर्धन और विकास का संकल्प लेने की जरूरत है। यह बात चिंताजनक ही नहीं, शर्मनाक भी है। पर्यावरण प्रदूषण की समस्या पर सन् 1972 में संयुक्त राष्ट्र संघ ने स्टॉकहोम (स्वीडन) में विश्व भर के देशों का पहला पर्यावरण सम्मेलन आयोजित किया। इसमें 119 देशों ने भाग लिया और पहली बार एक ही पृथ्वी का सिद्धांत मान्य किया।

इसी सम्मेलन में संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यूएनईवी) का जन्म हुआ तथा प्रति वर्ष 5 जून को पर्यावरण दिवस आयोजित करके नागरिकों को प्रदूषण की समस्या से अवगत कराने का निश्चय किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य पर्यावरण के प्रति जागरूकता लाते हुए राजनीतिक चेतना जागृत करना और आम जनता को प्रेरित करना था।

19 नवंबर 1986 से पर्यावरण संरक्षण अधिनियम लागू हुआ। जल, वायु, भूमि-इन तीनों से संबंधित कारक तथा मानव, पौधे, सूक्ष्म जीव, अन्य जीवित पदार्थ आदि पर्यावरण के अंतर्गत आते हैं।

बड़े पर्यावरण मुद्दे जैसे भोजन की बरबादी और नुकसान, वनों की कटाई, ग्लोबल वार्मिंग का बढ़ना आदि को बताने हेतु विश्व पर्यावरण दिवस की शुरुआत की गयी थी। पूरे विश्व में अभियान को प्रभावी बनाने के लिये वर्ष के खास थीम और नारे के अनुसार हर वर्ष के उत्सव की योजना बनायी जाती है।

आयुर्वेट लिमिटेड पर्यावरण संरक्षण की दिशा में निरंतर प्रयासरत है। संस्थान द्वारा किसानों के साथ मिलकर औषधीय पौधों की खेती, हाइड्रोपोनिक्स तकनीक, वर्मी कम्पोस्ट आदि पर काम कर रहा है। इससे जहां किसानों की आय बढ़ी है, पर्यावरण संरक्षण की दिशा में भी महत्वपूर्ण कार्य हुआ है।

□□

विश्व दूध दिवस (1 जून)

1 जून को विश्व दूध दिवस है। अपनी जिंदगी में दूध की कीमत को हर इंसान पहचानता है। दूध सेहत के लिए बहुत फायदेमंद भी है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि दुनिया में विश्व दूध दिवस भी मनाया जाता है। सबसे पहले 2001 में 1 जून को विश्व दूध दिवस मनाया गया था। इस दिन हमारे भोजन में दूध की महत्ता के बारे में प्रकाश डाला जाता है।

बरसों पहले हमारे पूर्वज दूध का मूल्य पहचानते थे इसलिए उन्होंने हमारे भोजन में दूध को शामिल किया। बच्चों के दूध की जरूरत को देखते हुए मां का दूध सर्वोत्तम माना गया। लेकिन सभ्यता के विकास के साथ ही फास्ट फूड या जंक फूड का चलन बढ़ता गया और दूध की मात्रा लोगों के भोजन में कम होती गयी। दूध की महत्ता को ध्यान में रखते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ के खाद्य एवं कृषि संगठन ने 1 जून को विश्व दूध दिवस मनाने का निर्णय लिया।

भारत में विश्व दूध दिवस मानने के बारे में खास बात यह है कि यहां विश्व दूध दिवस 1 जून को मनाया जाता है और राष्ट्रीय दूध दिवस 26 नम्बर को मनाया जाता है। इस तरह हमारे देश में साल में दो बार लोगों को दूध के बारे में जागरूक किया जाता है।

आयुर्वेट लिमिटेड किसानों को दूध की प्रोसेसिंग और उससे उत्पाद जैसे पनीर, खोया, मिठाइयां, देशी घी बनाने का प्रशिक्षण दे रहा है। साथ ही उनको इसकी मार्केटिंग की ट्रेनिंग भी दी जा रही है, ताकि जहां उपभोक्ताओं को शुद्ध एवं ताजे उत्पाद मिले तो वहीं किसानों की आय भी बढ़ जाए। हमारा यह भी सुझाव है कि दूध को मिड डे मील में शामिल किया जाना चाहिए। इससे जहां बच्चों को पौष्टिक दूध मिलेगा, वही पशुपालकों को भी इसका लाभ मिलेगा।

□□

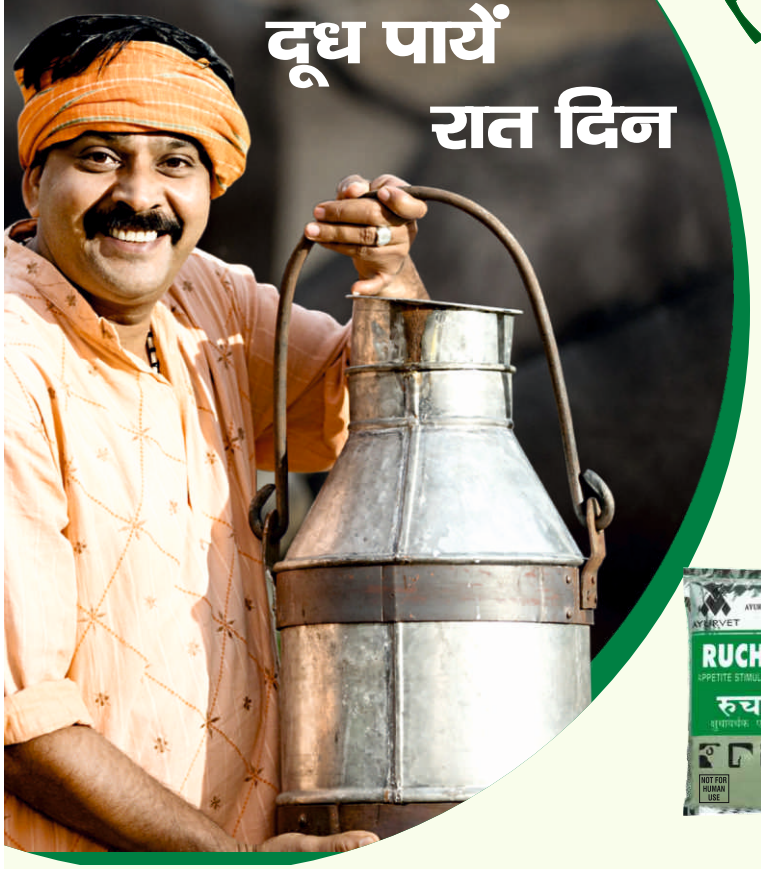

AYURVET
जब भी पशु करे
खाने में आनाकानी
रुचामैक्स
दूर करे परेशानी
महीने में दें
सात दिन
दूध पायें
रात दिन
RUCHAMAX
APPETITE STIMULANT & DIGESTIVE TONIC
रुचामैक्स
क्षुधावर्धक एवं पाचक टॉनिक
रुचामैक्स
क्षुधावर्धक एवं पाचक टॉनिक
अधिक जानकारी के लिए
टोल फ्री नं० पर मिस्ड कॉल करें
97803 11444

आत्मनिर्भर भारत पैकेज

पशुपालन, हर्बल खेती, मत्स्य पालन और मधुमक्खी पालन पर जोर

–रंजन कुमार राकेश

कोरोना संकट में देश की अर्थव्यवस्था को उबारने के लिए 20 लाख करोड़ के आर्थिक पैकेज का ऐलान किया है, जिसे आत्मनिर्भर भारत नाम दिया गया है। आत्मनिर्भर भारत के तीसरे चरण में वित्त मंत्री माननीय श्रीमती निर्मला सीतारमण ने कृषि क्षेत्र, पशुपालन, मछली पालन, फूड प्रॉसेसिंग उद्योग के क्षेत्र के कई महत्वपूर्ण ऐलान किए हैं। वित्त मंत्री ने कहा कि लॉकडाउन के दौरान, दूध की मांग 20-25 प्रतिशत कम हुई। सहकारी समितियों से 560 लाख लीटर की रोजाना खरीद की गई। नई स्कीम के तहत डेरी कोऑपरेटिव्स को वर्ष 2020-2021 के लिए ब्याज में 2 फीसदी प्रति वर्ष की छूट दी गई।

कोरोना संकट में देश की अर्थव्यवस्था को उबारने के लिए 20 लाख करोड़ के आर्थिक पैकेज का ऐलान किया है, जिसे आत्मनिर्भर भारत नाम दिया गया है। आत्मनिर्भर भारत के तीसरे चरण में माननीय वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण ने कृषि क्षेत्र, पशुपालन, मछली पालन, फूड प्रॉसेसिंग उद्योग के क्षेत्र के कई महत्वपूर्ण ऐलान किए हैं। वित्त मंत्री ने कहा कि लॉकडाउन के दौरान, दूध की मांग 20-25 प्रतिशत कम हो गई। सहकारी समितियों के जरिए 560 लाख लीटर की रोजाना खरीद की गई। नई स्कीम के तहत डेरी कोऑपरेटिव्स को वर्ष 2020-2021 के लिए ब्याज में 2 फीसदी प्रतिवर्ष की छूट दी गई।

पशुपालन आधारभूत संरचना विकास निधि (Animal Husbandry Infrastructure Development Fund) डेरी सैक्टर के लिए पशुपालन आधारभूत संरचना विकास निधि के तहत 15,000 करोड़ रुपए का बजट पेश किया गया है। डेरी क्षेत्र में प्रोसेसिंग मे प्राइवेट इन्वेस्टर्स को बढ़ावा दिया जाएगा। डेरी प्रसंस्करण, मूल्य संवर्धन और मवेशियों के चारे के लिए के

बुनियादी ढांचे में निजी निवेशकों को जगह दी जाएगी। पशुपालन में निजी निवेश को बढ़ावा देने के लिए 15,000 करोड़ रुपए का एनिमल हसबेंडरी इंफ्रास्ट्राक्चर डेवलपमेंट फंड बनाया है।

वित्त मंत्री ने कहा कि दुग्ध प्रसंस्करण, वैल्यू एडीशन और कैटल फीड इंफ्रास्ट्रक्चर में निजी निवेश को बढ़ावा देने का मकसद है। देश के कई क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर दूध का उत्पादन होता है। इन क्षेत्रों में दूध उत्पादन में निजी निवेश में बड़ी संभावना है। पशुपालन क्षेत्र के उद्यमियों को इस योजना का लाभ मिलेगा।

राष्ट्रीय पशु रोग नियंत्रण कार्यक्रम (National Animal Disease Control Programme) पशुओं में मुंहपका व खुरपका (एफएमडी) और ब्रूसेलोसिस बीमारी के टीके के लिए 13,343 करोड़ रुपए का बजट पास किया गया है।

देश में पालतू मवेशी के मुंह में घाव होने की बीमारी बहुत पुरानी है। इसे आम भाषा में मुंहपका और खुरपका कहा जाता है। इसका असर दूध उत्पादन पर भी होता है। इस समस्या को गंभीरता से लेते हुए वित्त मंत्री ने कहा कि पशुओं की सुरक्षा के लिए देशभर में टीकाकरण अभियान चलाया जाएगा। इसे

नेशनल ऐनिमल डिजीज कंट्रोल प्रोग्राम नाम दिया गया है। इस कार्यक्रम पर बजट 13,343 करोड़ रुपए होगा। इस प्रोग्राम के तहत 53 करोड़ पशुओं को वैक्सीन दी जाएगी, जिसमें 1.5 करोड़ गाय-भैंस शामिल होंगे।

गाय, भैंस, बकरी और सूअर में एफएमडी और ब्रूसेलोसिस के बचाव के लिए 100 प्रतिशत टीकाकरण का लक्ष्य रखा गया है। पशुपालन विभाग के अनुसार ग्रीन जोन में पशुओं का टीकाकरण मछुआरों के लिए प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना (PMMSY) के माध्यम से 20,000 करोड़ रुपए वित्त मंत्री ने मछुआरों के लिए कई सारी योजनाओं की शुरूआत की है। समुद्री और अंतर्देशीय मत्स्य पालन के लिए 11,000 करोड़ रुपए। 9000 हजार करोड़ रुपए आधारभूत सुविधाओं के लिए। अगले पांच वर्षों में 70 लाख टन अतिरिक्त मछली उत्पादन, जिससे 55 लाख लोगों को रोजगार मिलेगा। केज कल्चर, समुद्री शैवाल की खेती, सजावटी मछली पालन के साथ-साथ नई फिशिंग वेसल्स, ट्रैसेबिलिटी, लेबोरेटरी नेटवर्क आदि प्रमुख गतिविधियां होंगी।

केज कल्चर, सी विड फार्मिंग, ओर्नामेंटल फिशरीज और नए फिशिंग वेसल्स, ट्रेसेबिलिटी, लैबोरेटरी नेटवर्क, आदि गतिविधियों पर पैसा होगा खर्च। जिस अवधि में मछुआरे मछली नहीं पकड़ते, उस अवधि में मछुआरों को सहयोग दिया जाएगा। मछुआरों और उनके बोट का बीमा किया जाएगा। अगले 5 साल में 70 लाख टन का अतिरिक्त मछली उत्पादन होगा। 55 लाख लोगों को रोजगार मिलेगा। मत्स्य निर्यात दोगुना होकर एक लाख करोड़ रुपए तक पहुंच जाएगा। इस योजना के तहत आइसलैंड, हिमालय क्षेत्र, पूर्वोत्तर और एस्पिरेशनल जिलों पर मुख्य फोकस रहेगा।

ग्रामीण क्षेत्रों में मधुमक्खी पालन के जरिए आजीविका को बढ़ावा देने के लिए 500 करोड़ इस योजना के तहत

पॉलिनेशन (परागण) के माध्यम से फसलों की उपज और गुणवत्ता में वृद्धि करने का प्रयास किया जाएगा। शहद के साथ ही मधुमक्खियों के दूसरे उत्पाद जैसे मोम उत्पादन के लिए नई योजना लाई जाएगी। मधुमक्खी पालन की बुनियादी जरूरतों में एकीकृत मधुमक्खी पालन केंद्र, कलेक्शन सेंटर्स, मार्केटिंग और भंडारण केंद्र, पोस्ट हार्वेस्टिंग और वैल्यू एडिशन जैसी सुविधाएं देने का प्रयास रहेगा।

मधुमक्खी पालन में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने का प्रयास किया जाएगा। इस योजना से दो लाख मधुमक्खी पालकों की आय में वृद्धि होगी और उपभोक्ताओं को अच्छी गुणवत्ता वाला शहद मिलेगा।

10 बड़े ऐलान

1. किसानों की आमदनी बढ़ाने के लिए एक लाख करोड़ रूपए

किसानों के सामने भंडारण और संवर्धन की समस्या हमेशा से रही है। ऐसे में किसानों को इसके लिए एक लाख करोड़ रुपए का फंड दिया जायेगा। इससे गोदाम और स्टोरेज सेक्टर को बढ़ावा देने में इसे खर्च किया जायेगा।

2. हर्बल खेती को बढ़ावा देने हेतु 4,000 करोड़ रूपए आवंटित

भारत में हर्बल खेती को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने 4,000 करोड़ रुपए का आवंटन किया है। इसके तहत दो वर्षों में हर्बल खेती के तहत 10 लाख हेक्टेयर को कवर करने का लक्ष्य है। इसके जरिए गंगा के किनारों पर औषधीय पौधों का गलियारा बनाया जाएगा। वित्त मंत्री ने कहा कि इससे किसानों को 5,000 करोड़ रुपए तक की आमदनी होगी। जन औषधि की खेती करने के साथ उसका नेटवर्क किया जा रहा है।

3. पशुओं के टीकाकरण के लिए 13,343 करोड़ रूपए

सरकार देश के 52 करोड़ पशुओं (गाय, भैंस, बकरी, सूअर आदि) को टीका लगाने की योजना लेकर आई है। इसके लिए कुल 13,343 करोड़ रुपए का प्रावधान किया गया है। इससे पशुओं को बीमारियों से बचाया जा सकेगा। दूध का उत्पादन भी बढ़ेगा। लगभग 1.5 करोड़ गायों को टीका लगाया जा चुका है।

4. पशुपालन क्षेत्र में सुधार पर जोर

सरकार ने पशुपालन क्षेत्र के बुनियादी जरूरतों को पूरी करने के लिए 15,000 करोड़ रुपए का आवंटन किया है।

लॉकडाउन के दौरान दूध की मांग 20-25 फीसद घटी है। नई योजना के तहत डेरी कोऑपरेटिव्स को वर्ष 2020-2021 के लिए ब्याज में 2 फीसदी प्रतिवर्ष की छूट मिलेगी। इसके अलावा जो लोग जल्द भुगतान करेंगे उन्हें अतिरिक्त दो फीसदी ब्याज छूट दी जाएगी। वित्त मंत्री ने कहा कि इससे दो करोड़ किसानों को फायदा पहुंचेगा और इसका कुल 5,000 करोड़ रुपए का खर्च आएगा। बाकी के पैसे डेरी प्रसंस्करण, मूल्य संवर्धन और पशु चारे के लिए खर्च होंगे।

5. फूड प्रोसेसिंग के लिए 10 हजार करोड़ रूपए

वित्त मंत्री ने सूक्ष्य, खाद्य संस्करण इकाइयों के लिए 10,000 करोड़ रुपए की योजना का ऐलान किया है। इससे करीब दो लाख सूक्ष्य इकाइयों को फायदा मिल सकता है। योजना समूह(कलस्टर) आधारित होगी। इसमें स्थानीय कंपनियों को सहयोग दिया जायेगा। जैसे बिहार का मखाना, यूपी के आम, जम्मू-कश्मीर के केसर जैसे खेती में कलस्टर बनाया जाएगा।

6. मत्स्य पालन और कोल्ड चेन के लिए 20,000 करोड़ रूपए

प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के लिए 20,000 करोड़ रुपए देने की घोषणा हुई है। इसमें से 11,000 हजार करोड़ रुपए समुद्री और अंतरदेशीय मत्स्यपालन पर खर्च होंगे जबकि 9,000 करोड़ रुपए से कोल्ड चेन बनाए जाएंगे। सरकार का दावा है कि इससे मछली का उत्पादन 70 लाख टन अगले पांच साल में होगा जबकि इससे 55 लाख लोगों को रोजगार भी मिलेगा। सरकार का एक लाख करोड़ रुपए के निर्यात का लक्ष्य है। मछुआरों और नावों का बीमा भी कराया जाएगा।

7. मधुमक्खी पालन को बढ़ाने का लक्ष्य

वित्त मंत्री ने कहा है कि मधुमक्खी पालन से संबंधित बुनियादी ढांचे के विकास के लिए सरकार एक योजना लागू करेगी। इसमें महिलाओं की क्षमता निर्माण पर विशेष जोर देने के साथ दो लाख मधुमक्खी पालकों के लिए आय बढ़ाने का लक्ष्य है। मधुमक्खी पालन करने वाले किसानों के लिए 500 करोड़ रुपए का पैकेज दिया जायेगा। ग्रामीण इलाकों में जो लोग मधुमक्खी पालन करते हैं उन्हें इससे सपोर्ट मिलेगा। दो लाख मधुमक्खी पालन करने वाले लोगों की आमदनी बढ़ेगी।

8. आवश्यक वस्तु अधिनियम में बदलाव

सरकार ने कहा है कि किसानों के लिए बेहतर मूल्य प्राप्ति को आसान करने के लिए सरकार आवश्यक वस्तु (एशेंशियल कमोडिटीज) अधिनियम 1955 में संशोधन करेगी। इससे किसानों को अनाज, खाद्य तेल, तिलहन, दालें, प्याज और आलू आदि को कम कीमत में नहीं बेचना पड़ेगा।

9. कृषि उपज मंडी समिति में फसल बेचने से छुटकारा

किसानों को मार्केटिंग विकल्प प्रदान करने के लिए कृषि विपणन सुधारों को लागू करने के लिए सरकार कानून लाने जा रही है। किसान अंतरराज्यीय व्यापार कर सकेंगे। वित्त मंत्री का दावा है कि ये कानून किसान को आकर्षक मूल्य पर उपज बेचने के लिए पर्याप्त विकल्प प्रदान करेगा। पहले किसानों को सिर्फ APMC (कृषि उपज मंडी समिति) को बेचना पड़ता था लेकिन अब यह मजबूरी खत्म हो गई। इससे किसानों को अच्छी कीमत मिल सकती है।

10. ऑपरेशन ग्रीन्स का दायरा बढ़ा

ऑपरेशन ग्रीन्स को टमाटर, आलू और प्याज से बढ़ाकर सभी फलों और सब्जियों तक किया जा रहा है। इसमें 500 करोड़ रुपए का प्रावधान। इससे पहले इस योजना में टमाटर, आलू और प्याज को ही शामिल किया गया था। इसके अलावा वित्त मंत्री ने बताया कि लॉकडाउन के दौरान सरकार ने न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) देने के लिए 74,300 करोड़ रुपए के कृषि उत्पाद खरीदे और पीएम किसान फंड के तहत 18,700 करोड़ रुपए किसानों को दिए गए। दो महीनों में 6,400 करोड़ रुपए के फसल बीमा क्लेम किसानों को भुगतान किया गया। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 12 मई 2020 को देश को लॉकडाउन में हो रहे नुकसान से उबारने के लिए बीस लाख करोड़ रुपए के राहत पैकेज का ऐलान किया था। इसके बाद से 15 मई 2020 को वित्त मंत्री ने तीसरे दिन इसके तहत आवंटित पैसों का ब्योरा दिया। पहले दिन उन्होंने मध्यम, लघु एवं सूक्ष्म उद्योगों के लिए ऐलान किया था। दूसरे दिन के ऐलान में सरकार ने प्रवासी मजदूरों को मुफ्त में दो महीने के अनाज से लेकर छोटे और सीमांत किसानों के लिए भी कई बड़े ऐलान किये थे। □□

आई बरसात, चलो पेड़ लगाएं

झमाझम बरसात की शुरूआत ने मानो सब कुछ नया-नया कर दिया है। लहलहाते पत्ते झूम कर बादलों का धन्यवाद कर रहे हैं। कड़ाके की गर्मी के बाद यह बारिश की बूंदें बच्चों और किसानों के लिए ढेर सारी खुशियां लेकर आई हैं। प्रकृति के गर्भ में सूख रहे जल के स्रोतों को फिर से तरावट मिली है। यह समय हम सभी पृथ्वी वासियों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। यह वक्त है कि हम अपने सालभर के जल की आवश्यकता को ध्यान में रखकर, बारिश के साफ और मीठे पानी को यूं ही न

बह जाने दें। हम बारिश के जल को दिशा देकर आसपास के तालाब एवं अन्य जल स्रोतों तक पहुंचाएं, जिससे बाद की जरूरतों के लिए पानी उपलब्ध हो सके। अपने आसपास के खाली पड़े जमीनों पर वृक्षारोपण करने का यह सबसे उपयुक्त

समय है। इस समय जहां एक ओर पौधों की सिंचाई के लिए जरूरी मीठा जल प्रकृति से मिल जाता है दूसरी ओर उनके सूखने की दर भी बहुत कम रहती है।

संजीवनी परियोजना

आयुर्वेट के चेयरमैन श्री प्रदीप बर्मन के दिशा निर्देश में मोबियस फाउंडेशन एवं साथी संस्था 'संजीवनी परियोजना' के अंतर्गत औषधीय एवं फल के 5000 पौधों का रोपण करवा रही है। मुख्यतः हरियाणा के सोनीपत एवं पानीपत जिले में यह कार्यक्रम किसानों एवं स्कूली बच्चों की भागीदारी में जोर शोर से चल रहा है। आप सभी पाठकों से भी निवेदन है कि अपने घर, खेत, बगीचों में पौधारोपण कर इस बरसात के मौसम को सार्थक करें। आई है बरसात, चलो पेड़ लगाएं।

विश्व दुग्ध दिवस पर प्रतियोगिता का आयोजन

विश्व दुग्ध दिवस की 20 वीं वर्षगांठ पर आयुर्वेट लिमिटेड द्वारा एक सरप्राइज कैम्पेन किया गया जिसका शीर्षक था

''होल्ड द ग्लास फुल ऑफ मिल्क एंड क्लिक सेल्फी विद यूअर फैमिली ओर यूअर फार्मर'' (दूध से भरा गिलास पकड़ कर और अपने परिवार या अपने किसान के साथ सेल्फी क्लिक करो)। हमें यह बताते हुए बहुत ही खुशी हो गई कि हमें बहुत सारी अच्छी-अच्छी फोटो प्राप्त हुई। इसमें से कुछ फोटो को हम यहां स्थान दे रहे हैं।

थनैला की समस्या है बहुत भारी, रोकथाम में ही है समझदारी।
समय से जांच और उपचार, करें हम इस पर विचार।।

AYURVET

मैस्टीलेप के फायदे

- रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाएं एवं थनैला से बचाएं
- स्वच्छ दूध उत्पादन में सहायक
- थन की सूजन एवं दर्द कम कर पशु को आराम दिलाएं

मैस्टीलेप 50 ग्राम, 125 ग्राम ट्यूब तथा 125 मि.ली. स्प्रे में भी उपलब्ध है।

मैस्टीलेप

थनैला रोग की रोकथाम के लिये हर्बल जैल

अधिक जानकारी के लिए हमारे टोल फ्री नंबर पर संपर्क करें।
1800-123-3734
सोम-शुक्र प्रातः 9 से 6 बजे तक

आयुर्वेट रिसर्च फाउण्डेशन

नवीनतम उपकरणों से सुसज्जित अनुसंधान केंद्र में निम्नलिखित जांच सुविधाएं उपलब्ध-

- ✓ खाद्य, पशु आहार और हरा चारा
- ✓ पानी
- ✓ मिट्टी
- ✓ जैविक खाद
- ✓ औषधीय पौधे
- ✓ एंटीबायोटिक्स
- ✓ माइकोटॉक्सिन

हमारे अनुसंधान केंद्र में आपका स्वागत है। हम शैक्षिक दौरों के लिए आवेदन आमंत्रित करते हैं।

हम मनुष्यों और पशुधन के लिए सुरक्षित और गुणवत्तायुक्त खाद्य उत्पादन में सहयोग करते हैं।

Registered Office : 4th Floor , Sagar Plaza, Distt. Centre, Vikas Marg, Laxmi Nagar, Delhi, INDIA - 110 092.
Phone: 011-22455993 • Email: info@ayurvet.com • Website: www.ayurvet.com

Corporate Office: Unit No. 101-103, 1st Floor, KM Trade Tower, Plot No. H-3, Sector-14, Kaushambi, Ghaziabad -201010 (U.P.)
Tel.: 0120-7100201 • Fax : 0120-7100202

AYURVET RESEARCH FOUNDATION

सफल ब्यांत - अधिक दूध उत्पादन तथा मुनाफे की ओर बढ़ते कदम

बेहतर पशु स्वास्थ्य, अच्छा पाचन और अधिक दुग्ध उत्पादन

स्वस्थ ब्यांत

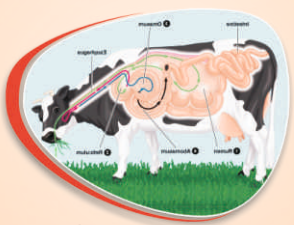

बढ़िया पाचन प्रणाली

स्वस्थ अयन

एक्सापार

जेर गिराने व गर्भाशय की सफाई के लिए

रुचामैक्स

क्षुधावर्धक एवं पाचक टॉनिक

रैस्टोबल

रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाये,
तनाव से बचाए और कार्यक्षमता बढ़ाए

AYURVET™ आयुर्वेट लिमिटेड

कॉरपोरेट कार्यालयः यूनिट नं. 101-103, प्रथम तल, के.एम. ट्रेड टावर, प्लाट नं. एच-3, सेक्टर-14, कौशांबी, गाजियाबाद-201010 (उ.प्र)
दूरभाषः +91-120-7100201 फैक्सः +91-120-7100202
ई-मेलः customercare@ayurvet.com वेबः www.ayurvet.com
सीआईएन सं.: U74899DL1992PLC050587

रजिस्ट्रड ऑफिसः चौथी मंजिल, सागर प्लाज़ा, डिस्ट्रिक्ट सेन्टर, लक्ष्मी नगर, विकास मार्ग, नई दिल्ली-110092

पारंपरिक ज्ञान
आधुनिक अनुसंधान